CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16.2

2232

[illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जी ख० सागर

...ालेका ...ाक्षर	लौटानेकी तिथि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८३२

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
नरिया, (का. हि. वि. वि.) वाराणसी-५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला २–१०

मन्दिर-वेदीप्रतिष्ठा-कलशारोहणविधि

सम्पादक

—पं० पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर

प्रकाशक
श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला
भदैनी, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थमाला सम्पादक और नियामक
पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

प्रथमावृत्ति १००० प्रति
दीपमालिका —
वीरनिर्वाण सम्वत् २४८६
मूल्य १) २५ नया पैसा

मुद्रक—
कैलाश प्रेस,
सोनारपुर, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आद्य वक्तव्य

पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठा, मन्दिरप्रतिष्ठा, वेदीप्रतिष्ठा, कलशारोहण तथा अन्य विधान आदिके कार्य समाजमें सदासे होते चले आये हैं। इन सबका अपना अपना महत्व है यह यहाँ बतानेकी आवश्यकता नहीं। एक समय था कि जब जैन समाजमें स्वर्गीय पं० पन्नालालजी न्यायदिवाकर, उदासीन श्रावक पं० पन्नालाल जी गोधा, पं० मोतीलालजी वर्णी, पं० नरसिंहदास जी, पं० मूलचन्द्रजी बिलोआ, पं० हजारीमलजी अजमेरा और पं० सुन्दरलालजी बसवानिवासी आदि विद्वान् प्रतिष्ठा विधिके माने हुए विद्वान् थे और समाजमें सर्वत्र इन्हीं विद्वानोंके द्वारा प्रतिष्ठाका कार्य सम्पन्न होता था। इन विद्वानोंने प्रतिष्ठाविषयक शास्त्रोंका संकलन अपनी पोथियोंमें संगृहीत करके रक्खा था और उसीके आधार पर वे सब जगह विधिविधान कराते थे। दुर्भाग्यवश वे विद्वान् अब हमारे बीचमें नहीं रहे। उनका संगृहीत साहित्य भी यत्र तत्र पड़ा रह गया।

इधर जैन समाजमें उच्च कोटिके विद्वान् तैयार तो हुए परन्तु उनकी दृष्टि प्रतिष्ठाकार्यकी ओर नहीं गई। उसका कारण है—प्रतिष्ठापाठोंमें प्रतिष्ठाचार्यका जो लक्षण बताया है उसे देखते हुए अपने आपमें कमीका अनुभव कर उच्च विद्वान् उस ओर नहीं बढ़े। अवसर देख कुछ विद्वान् आगे आये भी तो उनके पास इस विषयका साहित्य नहीं रहा। प्रतिष्ठापाठ अवश्य हैं पर उनका पूर्वापर अध्ययन कर जब तक भिन्न-भिन्न कार्यों के योग्य विधिका संकलन नहीं कर लिया जाता है तब तक विधि करानेमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदा कठिनाईका अनुभव करना पड़ता है। कितने ही विद्वानोंमें सामग्री छांटनेकी योग्यता नहीं है और कितने ही योग्यता रखते हुए भी आलस्यवश यह कार्य नहीं करते। फल यह हुआ कि कितने ही लोग जैन विवाह विधियोंमें छपे मङ्गलाष्टक और हवनकी विधि को लेकर ही प्रतिष्ठाचार्य बन बैठे हैं। समाजमें इस विषयका ज्ञान नहीं साथ ही उसमें वणिक् वृत्तिके कारण यह भावना आ गई कि छोटा मोटा कोई भी विद्वान् बुलालो और उससे कम खर्चमें यह कार्य करालो। इसलिये शास्त्रोक्त प्रतिष्ठा करानेवाले विरले ही दिखाई देते हैं। यही कारण है कि प्रतिष्ठाके यथार्थ लाभसे हम लोग वञ्चित हो रहे हैं।

उपलब्ध प्रतिष्ठापाठोंमें श्रीमद् जयसेनाचार्य रचित प्रतिष्ठापाठ सबसे प्राचीन है। जयसेनाचार्य कुन्द कुन्द स्वामीके अग्रधर शिष्य थे और उन्हींकी प्रेरणासे उन्होंने रत्नगिरिके ऊपर लालाट्ट राजाके द्वारा निर्मापित चन्द्रप्रभ चैत्यालयकी प्रतिष्ठाके लिये इसकी रचना की थी। इसकी रचना बहुत ही सुन्दर तथा विधि विधान आडम्बरहीन है। अतः इसे हीं सामने रखकर मैंने मन्दिरप्रतिष्ठा, वेदीप्रतिष्ठा और कलशारोहणकी विधियोंका संकलन किया है। हमारे प्रान्तके स्वर्गीय प्रतिष्ठाचार्य श्री पं० मोतीलालजी वर्णी, पं० मूलचन्द्रजी विलौआ और पं० बालचन्द्रजी राजवैद्यके सम्पर्कमें रहकर तथा इनकी हस्तलिखित पोथियोंका अवलोकन कर मैंने अपनी सुविधाके लिये जो सामग्री संकलित की थी उसे इस प्रतिष्ठापाठसे मिलान कर परिष्कृत किया है। कुछ सामग्री उक्त विद्वानोंकी पोथियोंसे भी संगृहीत है। इस पुस्तकमें मेरे स्वयंके निर्मित १५ श्लोक ही हैं, शेष सब संगृहीत हैं और जहाँ से जो सामग्री संगृहीत की है उसका उल्लेख पादटिप्पणमें कर दिया है। जहाँ टिप्पण नहीं है वह श्री जयसेनाचार्यके प्रतिष्ठापाठसे संगृहीत है ऐसा समझना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैंने यह संग्रह बहुत पहले कर रक्खा था परन्तु इसे प्रकाशित करानेकी ओर दृष्टि नहीं गई। अभी एक दो जगह प्रतिष्ठाचार्यों को जब मैंने केवल विवाहविधि लेकर प्रतिष्ठा कराते हुए देखा तब मुझे बहुत दुःख हुआ और मैंने निश्चय किया कि छोटा मोटा जो कुछ भी संग्रह है उसे प्रकाशित करा दिया जाय जिससे विद्वानोंकी कठिनाई दूर हो सके। यह विधि पूर्ण है यह मेरा दावा नहीं। मेरा तो यह अल्प प्रयास है जिसे मैं विद्वानों की सुविधाके लिये बड़ी नम्रतासे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

श्री जयसेनाचार्यने प्रतिष्ठाचार्यका लक्षणलिखते हुए लिखा है—

स्याद्वादधुर्योऽक्षरदोषवेत्ता निरालसो रोगविहीनदेहः।
प्रायः प्रकर्त्ता दमदानशीलो जितेन्द्रियो देवगुरुप्रमाणः ॥१॥
शास्त्रार्थसंपत्तिविदीर्णवादो धर्मोपदेशप्रणयः क्षमावान्।
राजादिमान्यो नययोगभाजी तपोव्रतानुष्ठितपूतदेहः ॥३॥
पूर्वं निमित्ताद्यनुमापकोऽर्थसंदेहहारी यजनैकचित्तः।
सद्ब्राह्मणो ब्रह्मविदां पटिष्ठो जिनैकधर्मा गुरुदत्तमन्त्रः ॥४॥
भुक्त्वा हविष्यान्नमरात्रिभोजी निद्रां विजेतुं विहितोद्यमश्च।
गतस्पृहो भक्तिपरात्मदुःखप्रहाणये सिद्धमनुर्विधिज्ञः ॥५॥
कुलक्रमायातसुविद्यया यः प्राप्तोपसर्गं परिहर्तुमीशः।
सोऽयं प्रतिष्ठा विधिषु प्रयोक्ता श्लाघ्योऽन्यथा दोषवती प्रतिष्ठा॥६
शास्त्रानभिज्ञं कुलवावदूकं लोभनलप्लुष्टमशान्तशीलम्।
परम्पराशून्यमपार्थसार्थं दूरात् त्यजन्तु प्रणिधाननिष्ठाः ॥७॥

जो स्याद्वाद विद्यामें प्रवीण हो, अक्षरोंके उच्चारणादि सम्बन्धी दोषोंको जाननेवाला हो, आलस्य रहित हो, नीरोग शरीर हो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियाकुशल हो, इन्द्रिय दमन और दान करना जिसका स्वभाव हो, देव और गुरूको प्रमाण माननेवाला हो, शास्त्रार्थरूप सम्पत्ति के द्वारा मिथ्यावादोंका खण्डन करनेवाला हो, धर्मोपदेशका स्नेही हो, क्षमावान् हो, राजादिसे मान्य हो, नयके योगको समझनेवाला हो, तप और व्रतसे जिसका शरीर पवित्र हो, निमित्तिज्ञानी हो, पदार्थके संदेहको दूर करनेवाला हो, पूजामें ही जिसका चित्त लगा हो, उत्तम ब्राह्मण हो, ब्रह्म आत्माके जाननेवालोंमें अत्यन्त पटु हो, जिनधर्मका माननेवाला हो, गुरुने जिसे मन्त्र प्रदान किया हो, जो पवित्र भोजन करता हो, रात्रि भोजनका त्यागी हो, निद्राके जीतनेमें समर्थ हो, तृष्णा रहित हो, भक्तिमें तत्पर आत्मीय जनोंका दुःख दूर करनेके लिये जिसे नाना प्रकारके मन्त्र सिद्ध हैं, विधिका जाननेवाला हो और जो कुल क्रमागत विद्याके द्वारा प्राप्त उपसर्ग का निराकरण करनेमें समर्थ हो वही प्रशंसनीय प्रतिष्ठाचार्य है। अन्यथा प्रतिष्ठा दोषपूर्ण होगी।

इस प्रकार प्रतिष्ठाचार्यका लक्षण बनाकर जयसेनाचार्यने यजमानोंको भी प्रेरित किया है कि वे ऐसे प्रतिष्ठाचार्यको दूरसे ही छोड़ देवें जो शास्त्रसे अपरिचित हो, अपने कुलका प्रलाप करनेवाला हो, लोभरूपी अग्निसे जल रहा हो, अशान्त चित्त हो, गुरु परम्परासे शून्य हो, और अर्थको नहीं जाननेवाला हो।

वसुनन्दि प्रतिष्ठासार संग्रहमें तो और भी अधिक विस्तारसे लिखा है। उक्त लक्षणको देखते हुए हमारा प्रतिष्ठाचार्योंसे नम्र अनुरोध है कि इस कार्यमें किसी प्रकारका छल नहीं होना चाहिये। गृहस्थ भोले हैं वे आपको महान् समझकर प्रतिष्ठाका कार्य सौंपते हैं और आप अपनी अयोग्यता अथवा आलस्यसे पूर्ण विधि नहीं कराते हैं तो यह महान् पाप बन्धका कारण है। यदि आपसे पाठ अथवा मन्त्रोंका उच्चारण ठीक ठीक नहीं बनता है अथवा आपके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार विचारमें पवित्रता नहीं है तो यह काम किसी कुशल विद्वान् को सौंप दीजिये और उसके संपर्कमें रहकर स्वयं अभ्यास कर लीजिये। गृहस्थ, विद्वान्का सन्मान करें यह उनका कर्तव्य है परन्तु विद्वान्को इस कार्यसे अर्थकी आकांक्षा नहीं रखना चाहिए। अर्थ कमानेके साधन संसारमें अनेक हैं। उनसे आप अपनी इच्छाएँ पूर्ण करें। प्रतिष्ठाके कार्यको व्यवसायका साधन न बनावें।

गृहस्थोंसे भी अनुरोध है कि वे प्रतिष्ठाके कार्यमें सामग्री आदि-का संकलन करते हुए किसी प्रकारकी कृपणता न करें। यद्वा तद्वा विधि करा लेनेसे जिनमार्गकी प्रभावना न होकर अप्रभावना ही होती है। जयसेनाचार्यने लिखा है—

सामग्रीयोजने शाठ्यं कार्पण्यं योगवञ्चनम्।
न कदाचिन्मनस्वीति कुर्यात्स्वहितकामुकः ॥

आत्महितैषी मनस्वी मानवको चाहिये कि वह सामग्रीके इकट्ठे करनेमें मूर्खता, कंजूसी और मन वचन कायकी कुटिलता न करे। जहाँ जैसी सामग्री चाहिये वहाँ वैसी सामग्री इकट्ठी करे और प्रतिष्ठाचार्यके कहे अनुसार प्रवृत्ति करे।

अधिकांश देखा जाता है कि पूजा विधान अथवा जुलूस आदि के कार्य देरसे प्रारम्भ किये जाते हैं अतः पीछे समयकी कमी देख बहुत सी विधि छोड़ देनी पड़ती है अथवा जल्दी जल्दी करनी पड़ती है इसलिये सब कार्य समयसे प्रारम्भ करना चाहिये जिससे निराकुलतासे सब कार्य सम्पन्न हो सकें।

वेदीप्रतिष्ठा आदिके कार्योंका आयोजन कमसे कम तीन दिन का रखना चाहिये, क्योंकि कम दिनोंमें विधि पूर्ण नहीं हो सकती। इस सामग्री के संकलन के लिये श्रीमान् राजवैद्य पं० बारेलालजी टीकमगढ़ने अपनी संकलित प्रतियाँ भेजकर महान् उपकार किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है इसलिये मैं उनका आभारी हूँ। कलशारोहणकी दूसरी विधि तथा नीव भरनेकी विधि खासकर उनके संकलनोंके आधारसे लिखी गई हैं।

आशा है इस संकलनसे पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठाको छोड़कर अन्य सामान्य विधि विधानके कार्योंमें विद्वानोंको कुछ सहयोग प्राप्त होगा। मैं प्रतिष्ठा विषयसे पूर्ण अनभिज्ञ नहीं हूँ फिर भी अभिज्ञ विद्वानोंका ध्यान इस कमीकी पूर्तिकी ओर आकृष्ट हो इस भावनासे मैंने यह प्रयास किया है। त्रुटियोंके लिये विद्वानोंसे क्षमाप्रार्थी हूँ।

दूरवर्ती होनेसे प्रूफ की अशुद्धियाँ अधिक रह गई है जिन्हें पाठक शुद्धिपत्रक देखकर शुद्ध कर लें।

सागर

विनीत

पन्नालाल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतज्ञता प्रकाश

इस पुस्तिकामें मन्दिर-वेदी प्रतिष्ठा तथा कलशारोहण आदि की विधि संगृहीत की गई है। जिन विद्वानोंके सहयोग अथवा उनकी पुस्तिकाओंके संग्रहसे इस कार्यमें सहायता ली गई है उन सबका उल्लेख पादटिप्पणमें तत्तत् स्थानों पर किया गया है। पुस्तिका तैयार होने पर बीनामें सम्पन्न विद्वद्गोष्ठीके समय उपस्थित विद्वानों को दिखलाई गई थी। खास कर श्रीमान् पं० जगन्मोहनलालजी शास्त्री कटनी और संहितासूरि श्रीमान् पं० नाथूलालजी इन्दौरने इसे आदि से अन्त तक देखकर उचित सुझाव दिये। उनके सुझावके अनुसार इसमें से कितने ही अंश अलग कर दिये गये और कितने ही अंश नये समाविष्ट किये गये। श्री पं० नाथूलाल जी इसे अपने साथ ले गये और सुविधानुसार उन्होने इसके मन्त्र आदि शुद्ध किये। प्रतिष्ठाचार्य पं० वारेलालजी टीकमगढ़ने भी आद्यन्त अवलोकन कर अनेक मन्त्रों तथा यन्त्रोंके चित्र बनाकर इसे विभूषित किया है। इसके लिये मैं प्रतिष्ठाशास्त्र के मर्मज्ञ इन विद्वानोंका अत्यन्त आभारी हूँ।

विद्वद्गोष्ठीके समय बीनामें वर्णी ग्रन्थमाला वाराणसीकी भी बैठक सम्पन्न हुई थी। उसमें श्रीमान् पं० फूलचन्द्रजी शास्त्री आदि विद्वानोंने ग्रन्थमालाकी ओरसे इसे प्रकाशित करनेकी स्वीकृति दी जिससे समस्त प्रेसकापी ग्रन्थमालाके कार्यालयमें भेज दी गई। अब सुविधानुसार ग्रन्थमालाकी ओरसे ही इसका प्रकाशन हो रहा है। श्री पं० फूलचन्द्रजीको छपाई की व्यवस्था करने आदि में पर्याप्त श्रम करना पड़ा है जिसके लिये मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशके अतिरिक्त क्या कर सकता हूँ?

आशा करता हूँ कि इस छोटेसे संकलनसे हमारे नये विद्वानोंको प्रतिष्ठाके कार्यमें कुछ सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

विनीत
पन्नालाल जैन

सागर
२०-११-६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुद्धि शोधन-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
आद्य वक्तव्य			
१	७	विलोआ	विलौआ
६	५	निमित्ति ज्ञानी	निमित्तज्ञानी
६	७	ब्रह्म आत्मा	ब्रह्म-आत्मा
६	१५	बनाकर	बताकर
८	६	अनभिज्ञ	अभिज्ञ
पुस्तक			
५	१०	शैले मनुजो	शले ये मनुजो
६	६	परिविघ्नान्	परविघ्नात्
१०	१	परिषिञ्चयामः	परिषेचयामः
१०	८	परमीष्ठिनेऽर्ध्यं	परमेष्ठिनेऽर्ध्यं
११	७	मुन्तुन्न	चुन्तुन्न
१६	६	साधुभ्योऽर्च्यते	साधुःसोऽभ्यर्च्यते
१७	११	मुखोद्गधर्मः	मुखोद्गतधर्मः
२०	१२	ओंम्	ओम्
२४	१५	चतुर्निकाय	च्तुर्णिकाय
३५	१८	वीरान्ताम्	वीरान्तान
३६	१	बनाने	बनावे
३६	१४	प्रामोदा	प्रमोदा
४४	१४	मन्दारस्राग्विभूतम्	महास्राग्विभूषिते
६४	२०	खण्डिन	खण्डित
७६	२३	उद्धत	उद्धृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१ मङ्गलपञ्चक	...	...	१
२ पञ्चपरमेष्ठीमण्डलकी तैयारी	...	...	२
३ जप प्रारम्भ करनेकी विधि	...	...	३
४ मङ्गलाष्टक	...	...	४
५ अङ्गन्यास	...	...	६
६ नवदेवपूजन	...	...	१०
७ विनायकयन्त्रपूजन	...	...	१२
८ जपका संकल्प	...	...	१६
९ कुछ जाप्यमन्त्र	...	...	२०
१० इन्द्रप्रतिष्ठा	...	...	२१
११ मण्डपप्रतिष्ठा	...	...	२४
१२ पूजास्थाप	...	...	२८
१३ अष्टदलकमलपूजा	...	...	२९
१४ शान्तिधारा	...	...	३१
१५ माघनन्दिकृत अभिषेकपाठ	...	...	३३
१६ घटयात्रा और नगरकीर्तन	...	...	३८
१७ शुद्धिविधान	...	...	४०
१८ आचार्यभक्ति	...	...	५४
१९ श्रुतभक्ति	...	...	५५
२० महर्षिपर्युपासन	...	...	५६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय			पृष्ठ
२१ चारित्रभक्ति	....	....	५६
२२ देवस्थापन	....	....	६२
२३ वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजन		....	६२
२४ कलशारोहणकी विधि (१)	....	....	६८
२५ हवनकी विधि और मन्त्र	....	...	६६
२६ सिद्धभक्ति (प्राकृत)	....	...	७८
२७ सिद्धभक्ति (संस्कृत)	....	...	७६
२८ कलशारोहणविधि (२)	...	...	८२
२६ ध्वजारोहण	....	....	६१
३० नीव भरनेकी विधि	...	....	६२
३१ शान्तिकर्मके अन्तर्गत पार्श्वनाथस्तोत्र		....	६५
३२ शान्त्यष्टक	....	...	६८
३३ शान्तिभक्ति	...	...	१००
३४ शान्तिमन्त्र	...	....	१०१
३५ वृहच्छान्तिमन्त्र	...	...	१०३
३६ नूतन गृहशुद्धि तथा प्रवेश	...	....	१०८
३७ अन्त मङ्गल	....	....	१०८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्दिर-वेदीप्रतिष्ठा-कलशारोहणविधि

मङ्गलपञ्चक

हिन्दी गीतिका छन्द

गुणरत्नभूषा विगतदूषाः सौम्यभावनिशाकराः
सद्बोधभानुविभाविभासितदिक्चया विदुषांवराः ।
निःसीमसौख्यसमूहमण्डितयोगखण्डितरतिवराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते श्रीवीरनाथजिनेश्वराः ॥१॥
सद्ध्यानतीक्ष्णकृपाणधारानिहतकर्मकदम्बका
देवेन्द्रवृन्दनरेन्द्रवन्द्याः प्राप्तसुखनिकुरम्बकाः ।
योगीन्द्रयोगनिरूपणीयाः प्राप्तबोधकलापकाः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते सिद्धाः सदा सुखदायकाः ॥२॥
आचारपञ्चकचरणचारणचुञ्चवः समताधराः
नानातपोभरहेतिहापितकर्मकाः सुखिताकराः ।
गुप्तित्रयीपरिशीलनादिविभूषिता वदतां वराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते श्रीसूरयोऽजितशंभराः ॥३॥
द्रव्यार्थभेदविभिन्नश्रुतभरपूर्णतत्त्वनिभालिनो
दुर्योगयोगनिरोधदक्षाः सकलवरगुणजालिनः ।
कर्तव्यदेशनतत्परा विज्ञानगौरवशालिनः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते गुरुदेवदीधितिमालिनः ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संयमसमित्यावश्यकापरिहाणिगुप्तिविभूषिताः
पञ्चाक्षदान्तिसमुद्यताः समतासुधापरिभूषिताः ।
भूपृष्ठविष्टरशायिनो विविधर्द्धिवृन्दविभूषिताः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते मुनयः सदा शमभूषिताः[१] ॥५॥

मन्दिरप्रतिष्ठा, वेदीप्रतिष्ठा और कलशारोहणविधिका उत्सव कमसे कम तीन दिनका रखना चाहिये। इस कार्यके लिये मन्दिरसे बाहर स्वच्छ स्थानमें सुन्दर मण्डप बनवाना चाहिये। मण्डपमें चबूतरा अथवा लकड़ीके तख्त पर विमानकी स्थापना कर उसमें श्री जिनेन्द्रदेवकी प्रतिमा विराजमान करे। श्री जी के सामने एक दूसरा तख्त लगाकर उस पर पञ्चरङ्गके चूर्णसे पञ्चपरमेष्ठीका मण्डल बनावे। मण्डलमें सर्व प्रथम बीचमें गोलाकार खींचकर उसमें ॐ लिखे। उसके बाद पाँच वलय बनावे। पहले वलयके ४६ खण्ड बनाकर उनमें अरहन्तके ४६ गुणोंकी स्थापना करे। दूसरे वलयमें ८ खण्ड बना कर सिद्धके आठ गुणों की स्थापना करे। तीसरे वलयमें ३६ खण्ड बनाकर आचार्यके ३६ गुणोंकी स्थापना करे। चौथे वलयमें २५ खण्ड बनाकर उपाध्यायके २५ गुणोंकी स्थापना करे और पाँचवें वलयमें २८ खण्ड बनाकर साधुके २८ गुणोंकी स्थापना करे। मण्डलके चारों कोनोंमें स्वस्तिक बनाकर उनपर नारियल, तूल तथा मालाओंसे सुशोभित चार मङ्गल कलश रक्खे। मङ्गल कलशों-के समीप घृतके दीपक प्रज्वलित करे। मंडलके पास अलग टेबल पर एक चौका रक्खे और उसपर सिंहासन रखकर श्री जिनेन्द्रदेवकी धातुकी प्रतिमा विराजमान करे। प्रतिमाके चारों ओर आठ

---

१ यह मंगलपञ्चक संकलयिता द्वारा निर्मित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रातिहार्य तथा अष्टमङ्गल द्रव्य रखकर शोभा बढ़ावे। प्रतिमाके ऊपर छत्रत्रय लगाये जावें और मण्डलको चमरोंसे सुशोभित किया जावे। मण्डलके तख्तके आगे पूजाके लिए एक तख्त अलग लगाना चाहिये। जहाँ पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर पूजक पूजाके लिए खड़े हों। इस प्रकार मंडलकी तैयारी कर मन्दिरके भीतर एकान्त स्वच्छ और हवादार स्थानमें जप प्रारम्भ करना चाहिये।

कार्यकी निर्विघ्न समाप्तिके लिये सवालक्ष, इकहत्तर हजार, इक्यावन हजार अथवा इक्कीस हजार जप अवश्य करना चाहिये। जप करनेवाले व्यक्ति मिथ्यात्व, अन्याय और अभक्ष्यके त्यागी हों, अनुष्ठानके दिनोंमें अवश्य ही ब्रह्मचर्यका पालन करते हों, रात्रि में चारों प्रकारके आहारके त्यागी हों और शुद्ध भोजन करते हों। मन्त्रका उच्चारण शुद्ध कर सकते हों और अपने कार्यमें रुचि, श्रद्धा और उत्साह रखते हों। आठ व्यक्ति इस कार्यको निराकुलता से पूरा कर सकते हैं इसलिये इन्हें पहलेसे निश्चित कर प्रतिष्ठाचार्य सब विधि समझा देवे। जप करनेवाले महाशय शुद्ध और नये धोती दुपट्टे पहनें। एक वस्त्र धारण कर जपमें न बैठें।

जिस स्थान पर जप करना हो वहाँ बीचमें एक बड़ा बाजौटा रख कर उसपर पुष्पोंसे एक नन्द्यावर्त स्वस्तिक बनावे। फिर पाँच कलशों को नारियल, तूल, माला आदिसे सजाकर तैयार रक्खे। ये कलश भले ही मिट्टीके क्यों न हों पर काममें लाये हुए न हों। एक कलशमें हल्दी, सुपारी तथा अक्षतोंके साथ १।) सवा रुपया डाल दे। शेष कलशोंमें हल्दी, सुपारी और अक्षत डाल दे। प्रधान कलश, जिसमें रुपया डाला गया है बाजौटाके बीचमें रक्खा जावे और शेष चार कलश उसके चारों दिशाओंमें रक्खे जावें। उसी बाजौटा (चौकी) पर पूर्व या उत्तर-की ओर एक सिंहासन पर विनायक यन्त्र विराजमान किया जावे। यदि यन्त्रको पूर्वमें विराजमान किया है तो उत्तरमें और उत्तरमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विराजमान किया है तो पूर्वमें घृतका एक दीपक प्रज्वलित कर रखा जावे। इस दीपककी अखण्ड ज्योति जलती रहे ऐसी व्यवस्था करना चाहिये। मिट्टी अथवा लकड़ीके चार थपा वनाकर उसमें पाँच रङ्गकी छोटी छोटी ध्वजाएँ लगावे और वे थपा बाजौटाके चारों कोनोंमें रख दे। जप करनेवालोंका मुख दक्षिण दिशाकी ओर न हो। जप करनेवालोंके सामने एक धूपघट, एक धूपपात्र, एक स्फटिक अथवा सूतकी माला और गणनाके लिए कुछ बादामें या लौंग रखी रहें। जपका मन्त्र मुखाग्र याद न हो तो एक कागज पर लिखकर सामने रख लेना चाहिये। यन्त्रके सम्मुख पूजाके लिये अष्ट द्रव्य तथा वर्तनोंका सेट जमा कर रख लेना चाहिये। रक्षासूत्र और यज्ञोपवीत भी पहलेसे तैयार कर लेना चाहिये।

इतनी सब तैयारी करा लेनेके वाद प्रतिष्ठाचार्य जपमें बैठनेवाले महाशयोंको अपने अपने आसन पर खड़ाकर सर्व प्रथम नीचे लिखा मङ्गलाष्टक पढ़े। सबके हाथमें पुष्प दे दे और—

'कुर्वन्तु ते मङ्गलम्'

के उच्चारणके साथ वे पुष्प बाजौटा पर स्थापित कलशोंके आगे थोड़े थोड़े छोड़ते जावें।

मङ्गलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमकुटप्रद्योतरत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनाम्भोधाववस्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥१॥

नाभेयादिजिनाः प्रशस्तवदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशति-
त्रैलोक्याभयदास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥२॥

ये पञ्चौषधऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिंगताः पञ्च ये
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधराश्च येऽपि विपुला ये सिद्धिबुद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥३॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः
जम्बू-शालमलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षाररौप्याद्रिषु
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥४॥

कैलासो वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी
चम्पा वा वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलोऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तिशिखरी नेमीश्वरस्यार्हतो
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥५॥

जायन्ते जिन-चक्रवर्ति-बलभृद्-भोगीन्द्र-कृष्णादयो
धर्मादेव दिगङ्गनाङ्गविलसच्छश्वद्यशश्चन्दनाः।
तद्धीना नरकादियोनिषु नरा दुःखं सहन्ते ध्रुवं
स स्वर्गात्सुखरमणीयकपदं कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥६॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

य: कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥७॥
आकाशं मूर्त्यभावादघकुलदहनादग्निरुर्वी क्षमाप्त्या
नैःसङ्ग्याद्वायुरापः प्रगुणशमतया स्वात्मनैष्ठ्यात्सुयज्वा
सोमः सौम्यत्वयोगाद्रविरिति च विदुस्तेजसः सन्निधानात्
विश्वात्मा विश्वचक्षुर्वितरतु भवतां मङ्गलं श्रीजिनेशः ॥८॥
इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्करं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणां मुखात् ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

अङ्गन्यास

मङ्गलाष्टकके बाद शरीरकी रक्षा और तत्तद् दिशाओंसे आनेवाले विघ्नोंकी निवृत्तिके लिये नीचे लिखे अनुसार अङ्गन्यास करे। दोनों हाथोंके अंगुष्ठसे लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पाँचों अंगुलियोंमें क्रमसे अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठीकी स्थापना करे। जपमें बैठनेवाले महाशय सर्वप्रथम दोनों हाथोंके अंगूठोंको बराबरीसे मिलाकर सामने करें तथा—

'ओं ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः'

इस मन्त्रका उच्चारण कर शिर झुकावें। फिर दोनों हाथोंकी तर्जनियों (अंगूठाके पासकी अंगुलियोंको) बराबरीसे मिलाकर सामने करें और—

'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर बीचकी दोनों अंगुलियोंको मिलाकर सामने करें और—

'ओं हूं णमो आइरीयाणं हूं मध्यमाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों अनामिकाओंको मिलाकर सामने करें और—

'ओं हौं णमो उवज्झायाणं हौं अनामिकाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों छिंगुरियोंको मिलाकर सामने करें और—

'ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों हथेलियोंको वराबर सामने फैलाकर—

'ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों कर पृष्ठोंको बराबर सामने फैलाकर—

'ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। तदनन्तर—

'ओं ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर दाहिने हाथसे शिरका स्पर्श करें। फिर—

'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर मुखका स्पर्श करें।

'ओं ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर हृदयका स्पर्श करें।

'ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर नाभिका स्पर्श करें।

'ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर पैरोंका स्पर्श करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'ओं ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर पूर्व दिशामें पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर दक्षिण दिशामें पुष्प या पीले सरसों फेंकें।

'ओं ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं पश्चिमदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर पश्चिम दिशामें पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर उत्तर दिशामें पुष्प या पीले सरसों फेंकें।

'ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर दशों दिशाओंमें पुष्प या पीले सरसों फेंकें।

'ओं ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर अपने शरीरका स्पर्श करें।

'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर अपने वस्त्रोंका स्पर्श करें।

'ओं ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर पूजाकी सामग्रीका स्पर्श करें।

'ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर अपने खड़े होनेकी जगहकी ओर देखें।

'ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वं जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर चुल्लूमें जल ले सब ओर फेंकें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिशासु, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदिशासु ओं ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा'

इस मन्त्रसे चुल्लूके जलको मन्त्र कर अपने शिर पर सींचें।

फिर प्रतिष्ठाचार्य—

'ओं नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा'

इस मन्त्रसे पुष्प अथवा पीले सरसोंको सात वार मंत्र कर परिचारकोंके शिर पर डाले। और—

'ओं हूं क्षूं फट् किरिटि किरिटि घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द वाः वाः हुँ फट् स्वाहा'

इस मंत्रसे पुष्प अथवा पीले सरसों मंत्र कर सब दिशाओंमें फेंके।

तदनन्तर प्रतिष्ठाचार्य—

'ओं नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा'

यह मंत्र पढ़कर जप करनेवाले महाशयोंके दाहिने मणिबन्ध (कलाई) में रक्षासूत्र बाँधे।

मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमो गणी।
मङ्गलं कुन्दकुन्दाद्यो जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम्॥

यह पढ़कर जप करनेवाले अपने ललाट पर केशरका तिलक लगावें। और—

ओं नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रय-स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

इस मंत्रका सबसे उच्चारण कराकर यज्ञोपवीत धारण करावे।

इसके बाद जप करनेवाले महाशय अपने अपने आसनों पर बैठ जावें। और यंत्रके सामने बैठनेवाला नीचे लिखे अनुसार नवदेवपूजन तथा विनायकयंत्रकी पूजा करे। पूजाके पहले—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'ओं भूर्भुवः स्वदिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषिञ्चयामः'
यह मंत्र पढ़कर यंत्रका अभिषेक कर ले।

नवदेवपूजन

अनन्तकालसंभवद्भवभ्रमणभीतितो
निवार्य संदधत् स्वयं शिवोत्तमार्यसद्मनि।
जिनेश-विश्वदर्शि-विश्वनाथ-मुख्यनामभिः
स्तुतं जिनं महामि नीरचन्दनैः फलैरहम्॥१॥

ओं ह्रीं अनन्तभवार्णवभयनिवारकानन्तगुणस्तुतायार्हते परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मकाष्ठहुतभुक् स्वशक्तितः
संप्रकाश्य महनीयभानुभिः।
लोकतत्त्वमचले निजात्मनि
संस्थितं शिवमहीपतिं यजे॥२॥

ओं ह्रीं अष्टकर्मविनाशकनिजात्मतत्त्वविभासकसिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थवाहमनवद्यविद्यया शिक्षणान्मुनिमहात्मनां वरम्।
मोक्षमार्गमलघुप्रकाशकं संयजे गुरुवरं परेश्वरम्॥३॥

ओं ह्रीं अनवद्यविद्याविद्योतनायाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशाङ्गपरिपूर्णसच्छ्रुतं यः परानुपदिशेत पाठतः।
बोधयत्यभिहितार्थसिद्धये तानुपास्य यजयामि पाठकान्॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं द्वादशाङ्गपरिपूर्णश्रुतपाठनोद्यतबुद्धिविभवोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उग्रमर्घ्यतपसाभिसंस्कृतिं ध्यानतानविनिवेशितात्मकम् ।
साधकं शिवरमासुखाप्तये साधुमीड्यपदलब्धयेऽर्चये ॥५॥

ओं ह्रीं घोरतपोऽभिसंस्कृतध्यानस्वाध्यायनिरतसाधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यो मिथ्यात्वमतङ्गजेषु तरुणप्रोन्नुन्नसिंहायते
एकान्तातपतापितेषु समरुत्पीयूषमेघायते ।
श्वभ्राख्यप्रहिसंपतत्सु सदयं हस्तावलम्बायते
स्याद्वादध्वजमागमं तमभितः संपूजयामो वयम् ॥६

ओं ह्रीं स्याद्वादमुद्राङ्कितपरमजिनागमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनेन्द्रोक्तं धर्मं सुदशयुतभेदं त्रिविधया
स्थितं सम्यक्रत्नत्रयलतिकयापि द्विविधया ।
प्रणीतं सागारेतरचरणतो ह्येकमनघं
दयारूपं वन्दे मखभुवि समास्थापितमिमम् ॥७॥

ओं ह्रीं सर्वज्ञवीतरागप्रणीतशाश्वतधर्मायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकींगतान्
वन्दे व्यन्तरभावनद्युतिवरान्कल्पामरावासगान् ।
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुभिर्दीपैश्च धूपैः फलै-
र्नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं कृत्याकृत्रिमत्रिलोकवर्तिश्रीजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यावन्ति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥९॥

ओं ह्रीं त्रिलोकवर्तिवीतरागबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनायकयन्त्रपूजा

परमेष्ठिन् मङ्गलादित्रय विघ्नविनाशने।
समागच्छ तिष्ठ तिष्ठ मम संनिहितो भव ॥१॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! मङ्गल-लोकोत्तम-शरणभूत! अत्रावतरावतर संवौषट्।

" अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

" अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्वच्छैर्जलैस्तीर्थभवैर्जराय-
मृत्यूग्ररोगापनुदे पुरस्तात्।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान् माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥२॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चन्दनैर्गन्धहृतालिवृन्द-
चितैर्हिमांशुप्रसरावदातैः।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान् माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदक्षतैर्मौक्तिकचारुकान्तिपाट-
चच्चरैःसितैर्मानसनेत्रमित्रैः ।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय······अक्षतं······

पुष्पैरनेकैरसवर्णगन्ध-
प्रभासुरैर्वासितदिग्वितानैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥५॥

ओं ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय······पुष्पं······

नैवेद्यपिण्डैर्घृतशर्कराक्त-
हविष्यभागैः सुरसाभिरामैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥६॥

ओं ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय······नैवेद्यं······

आरार्तिकैरत्नसुवर्णरुक्म-
पात्रार्पितैर्ज्ञानविकासहेतोः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥७॥

ओं ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय······दीपं······

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशासु यद्धूमवितानमृद्धं
तैर्धूपवृन्दैर्दहनोपसर्पैः ।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥८॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय……धूपं……

फलैरसालैर्वरदाडिमाद्यै-
र्हृद्घ्राणहार्यैरमलैरुदारैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥९॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय……फलं……

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे
ह्यनर्घ्यमर्घं वितरामि भक्त्या ।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद्
येषां सुखायास्तु निरन्तराय ॥ १० ॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय……अर्घं……

अनादिसन्तानभवान् जिनेन्द्रान्
अर्हत्पदेष्टानुपदिष्टधर्मान् ।
द्वेधाश्रियालिङ्गितपादपद्मान्
यजामि भक्त्या प्रकृतिप्रसक्त्यै ॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं अनन्तचतुष्टयसमवसरणलक्ष्मीं बिभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं ....

कर्माष्टनाशाच्युतभावकर्मो-
द्भूतीन् निजात्मस्वविलासभूपान् ।
सिद्धाननन्तांस्त्रिककालमध्ये
गीतान् यजामीष्टविधिप्रसक्त्यै ॥ १२॥

ओं ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगणं भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं ---

ये पञ्चधाचारपरायणानामग्रेसरा दक्षिणशिक्षिकासु ।
प्रमाणनिर्णीतपदार्थसार्थानाचार्यवर्यान् परिपूजयामि ॥

ओं ह्रीं पञ्चाचारपरायणाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घं ....

अर्थश्रुतं सत्यविबोधनेन
द्रव्यश्रुतं ग्रन्थविदर्भणेन ।
येऽध्यापयन्ति प्रवरानुभावा-
स्तेऽध्यापका मेऽर्हणया दुहन्तु ॥१४॥

ओं ह्रीं द्वादशाङ्गपठनपाठनोद्यतायोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घं ......

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान्
स्वकर्मभूवीध्रविखण्डनेषु ।
विविक्तशय्यासनहर्म्यपीठ-
स्थितान् तपास्विप्रवरान् यजामि ॥ १५ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशप्रकारचारित्राराधकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं ....

अर्हन्मङ्गलमर्चे सुरनरविद्याधरैकपूज्यपदम् ।
तोयप्रभृतिभिरर्घ्यैर्विनीतमूर्धा शिवाप्तये नित्यम् ॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं अर्हन्मङ्गलायार्घं ......

धौव्योत्पादविनाशनरूपाखिलवस्तुबोधनार्थकरम् ।
सिद्धं मंगलमिति वा मत्वार्चे चाष्टविधवस्तुभिः ॥१७॥

ओं ह्रीं सिद्धमङ्गलायार्घं ०......

यद्दर्शनकृतविभवाद् रोगोपद्रवगणा मृग इव मृगेन्द्रात् ।
दूरं भजन्ति देशं साधुभ्योऽर्च्यते विधिना ॥१८॥

ओं ह्री सिद्धमङ्गलायार्घं ०......

केवलिमुखावगतया वाण्या निर्दिष्टभेदधर्मगणम् ।
मत्वा भवसिन्धुतरीं प्रयजे तन्मंगलं शुद्ध्यै ॥१९॥

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं ......

लोकोत्तममथ जिनराट्पदाब्जसेवनयामितदोषविलयाय ।
शक्तं मत्वा धृतजलगन्धैरर्चे समीडितं प्रभवैः ॥ २० ॥

ओं ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमायार्घं ......

सिद्धाश्च्युतदोषमला लोकाग्रं प्राप्य शिवसुखं व्रजिताः ।
उत्तमपथगा लोके तानर्चे वसुविधार्चनया ॥ २१ ॥

ओं ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घं ......

इन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्रैरर्थिततपसां व्रतैषिणां सुधियाम् ।
उत्तममध्वानमसावर्चेऽहं सलिलगन्धमुखैः ॥ २२ ॥

ओं ह्रीं साधुलोकोत्तमायार्घं ......

रागपिशाचविमर्दनमत्र भवे धर्मधारिणामतुलम् ।
उत्तममपगतकामो वृषमर्चे शुचितरं कुसुमैः ॥ २३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं०........

अर्हच्छरणमथार्चेऽनन्तजनुष्वपि न जातु सम्प्राप्तम् ।
नर्तन-गानादिविधिमुद्दिश्याष्टकर्मणां शान्त्यै ॥ २४ ॥

ओं ह्रीं अर्हच्छरणायार्घं०........

निर्व्याबाधगुणादिकप्राग्र्यं शरणं समेतचिदनन्तम् ।
सिद्धानाममृतानां भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ॥ २५ ॥

ओं ह्रीं सिद्धशरणायार्घं०......

चिदचिद्भेदं शरणं लौकिकमाप्यं प्रयोजनातीतम् ।
त्यक्त्वा साधुजनानां शरणं भूत्यै यजामि परमार्थम् ॥२६॥

ओं ह्रीं साधुशरणायार्घं०......

केवलिनाथमुखोद्गधर्मः प्राणिसुखहितार्थमुद्दिष्टः ।
तत्प्राप्त्यै तद्यजनं कुर्वे मखविघ्ननाशाय ॥ २७ ॥

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घं०......

संसारदुःखहनने निपुणं जनानां
नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशप्रमाणम् ।
संपूजये त्रिविधभक्तिभरावनम्रः
शान्तिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थसार्थैः ॥ २८ ॥

ओं ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घं०......

जयमाला

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा
अग्रेसरं जिन वदन्ति भवन्तमिष्टम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनाद्यनन्तयुगवर्तिनमत्र कार्ये
विघ्नौघवारणकृतेऽहमपि स्मरामि ॥ १ ॥

गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते
गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवन्ति ।
तदा विघ्नसन्दोहशान्तिर्जनानां
करे संलुठत्यायतक्षेमकाणाम् ॥ २ ॥

कलेः प्रभावात्कलुषाशयस्य
जनेषु मिथ्यामदवासितेषु ।
प्रवर्तितोऽन्यो गणराजनाम्ना
लम्बोदरो दन्तिमुखो गणेशः ॥३॥

रुद्रेण कामज्वलितेन गौर्या
विनोदभारान्मलमुत्प्रदाय ।
कृतं पुराणेष्विति वाचयित्वा
सन्मंगलं तं कथमुद्गिरन्ति ॥४॥

यतस्त्वमेवासि विनायको मे
दृष्टेष्टयोगान्नविरुद्धवाचः ।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति
विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ॥५॥

जय जय जिनराज त्वद्गुणान्को व्यनक्ति
यदि सुरगुरुरिन्द्रः कोटिवर्षप्रमाणम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत्
कतिथ इह मनुष्यः स्वल्पबुद्ध्या समेतः ॥६॥

इति अर्हंदादिसप्तदशमन्त्रेभ्योऽर्घं ०......

श्रियं बुद्धिमनाकुल्यं धर्मप्रीतिविवर्धनम् ।
जिनधर्मे स्थितिर्भूयाच्छ्रेयो मे दिशतु त्वरा[१] ॥७॥

इति पुष्पाञ्जलिः ।

संकल्प

पूजा के वाद प्रतिष्ठाचार्य जप करनेवालोंके हाथमें कुछ फल, अक्षत, चांदी तथा फूल देकर अथवा कुछ न हो तो जल देकर निम्न-लिखित संकल्प पढ़वावे—

'ओम् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....... देशे .... प्रान्ते .... नगरे .... ऋतौ .... मासे .... .. पक्षे .... तिथौ .... सम्वत्सरे .... जैनमन्दिरे .... कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं .... इति मन्त्रस्य .... इति प्रमितस्य जापस्य संकल्पं कुर्मः, निर्विघ्नं समाप्तिर्भवतु अर्हं नमः स्वाहा'।

यह मन्त्र पढ़कर हाथमें लिया हुआ सामान अथवा जल अपने सामने चढ़ा दे।

प्रतिष्ठाचार्य सबके मुखसे मन्त्रका उच्चारण सुनकर यदि अशुद्ध हो तो शुद्ध करा दे। जप करनेवाले ९ वार णमोकार मन्त्र पढ़कर निश्चित मन्त्रका जाप शुरू कर दें। जापके लिये शुद्ध धूप तैयार की जाय। वाजारकी अशुद्ध धूप अग्निमें क्षेपणा पापका कारण है। जपमें जपकी प्रधानता है आहुतिकी नहीं, क्योंकि आहुतियाँ हवनके

---

१. जयमाला प्रतिष्ठापाठमें नहीं है, अतः अन्यत्रसे संकलित की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथ हो ही जाती हैं। प्रत्येक मालाकी समाप्तिपर धूपकी आहुति दाहिने हाथसे दी जा सकती है। अतः माला दाहिने हाथसे फेरना चाहिये। हवनमें आहुतिकी प्रधानता है, अतः आहुति दाहिने हाथसे देना चाहिये। जपवाले महाशयोंको जपपर्यन्त ब्रह्मचर्यसे रहना और शुद्ध भोजन करना चाहिये। परिणाम अत्यन्त निर्मल रखना चाहिये। जपवालोंकी देखरेखके लिये एक परिचारक पासमें नियुक्त रखना चाहिये। जपवाले परस्पर बातचीत न करें। जपके लिए जो संकल्प किया है उसे एक कागजपर लिखकर मध्य कलशके पास रख लेना चाहिए। एक व्यक्ति कागजपर जपका हिसाब लिखता रहे। निश्चित अवधिके भीतर अपना संकल्पित जप पूरा कर लेना चाहिये।

जापके कुछ मन्त्र

बृहच्छान्तिमन्त्र—

'ओंम् णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि अरहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि। ह्रौं शान्ति कुरु कुरु स्वाहा'।

मध्य शान्तिमन्त्र—

'ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'।

लघु शान्तिमन्त्र—

'ओं ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा'।

वेदीप्रतिष्ठा कलशारोहण तथा विम्बस्थापनके समय जापमन्त्र—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा'।

त्रैलोक्यमण्डलविधानके समय जापमन्त्र—

'ओं ह्रीं श्रीं अर्हं अनाहतविद्याधिपाय त्रैलोक्यनाथाय नमः सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा'।

ऋषिमण्डल वधानके समयका जापमन्त्र—

'ओं ह्रां ह्रीं ह्रुँ ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः'।

कलिकुण्डदण्डपूजनका जापमन्त्र—

'ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डस्वामिन् अतुलबल-वीर्य-पराक्रमममयाभीष्टसिद्धिं कुरु कुरु स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः ममात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द हुँ फट् स्वाहा'।

सिद्धचक्रविधानके समय जापमन्त्र—

तीन शान्ति मन्त्रोंमें से कोई भी जपा जा सकता है।

सूचना—जप प्रारम्भ करानेका कार्य प्रातः व सायंकाल दोनों समय करा लेना चाहिये। मध्याह्नके बाद एक बजेसे मण्डपमें जो पंचपरमेष्ठी विधानका मण्डल बनाया था उसके सामने बुलाकर प्रतिष्ठा कार्यके लिये १ इन्द्र, १ प्रतीन्द्र, १ इन्द्राणी और १ प्रतीन्द्राणी बनाना चाहिये।

इन्द्रप्रतिष्ठा

जो नियमित रूपसे कार्यकी विधिमें सम्मिलित हों, स्वस्थ हों, विकलाङ्ग न हों, हीनाचरण न हों, निश्चित समय तक ब्रह्मचर्यसे रहनेकी प्रतिज्ञा कर सकते हों, गृहस्थोचित शुद्ध भोजन करते हों सरलपरिणामी हों और व्यापार आदि अन्य चिन्ताओंसे मुक्त हों,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्हें इन्द्र बनाया जावे। यदि इनकी पत्नी इन्द्राणी बनना चाहती हैं तो उसमें भी उक्त विशेषताएँ होनी आवश्यक हैं। साथ ही छह माहसे अधिक गर्भवती अथवा अधिक छोटे बच्चेवाली न हो, अन्यथा विधि-विधानमें आकुलता हो सकती है। इन्द्र-इन्द्राणियोंको उत्तम पीतवस्त्र धारण करावे, मुकुट बाँधे तथा निम्नलिखित मन्त्र द्वारा रक्षासूत्र बाँधे।

'ओं नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा'।

फिर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अमृतस्नान करावे—

'ओम् अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा'।

(इस मन्त्रको पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य इन्द्र-इन्द्राणियों पर जलके छींटे डाले।

तदनन्तर चन्दन, मुकुट, माला, केयूर, हार, कुण्डल आदि उपलब्ध आभूषणोंको एक थालीमें रखकर मण्डलके सामने रखे और प्रतिष्ठाचार्य निम्नलिखित मन्त्र बोलकर उनपर पुष्प तथा पीले सरसों डाले—

'ओं ह्रां णमो अरहंताणं ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ओं ह्रूं णमो आइरियाणं ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं इन्द्रइन्द्राण्यो-राभूषणानि पवित्राणि कुरु कुरु स्वाहा'।

इस मन्त्रसे शुद्ध किये हुए चन्दन आदिको क्रमसे निम्न-लिखित मन्त्र बुलवा कर धारण करावे—

पात्रेऽर्पितं चन्दनमोषधीशं शुभ्रं सुगन्धाहृतचञ्चरीकम्।
स्थाने नवाङ्के तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकारहेतोः॥

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा'।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह श्लोक और मन्त्र बोलकर ललाट, मस्तक, ग्रीवा, हृदय, दोनों भुजाएँ, प्रकोष्ठ, नाभि और पृष्ठ भागमें नौ तिलक लगावे।

जिनांघ्रिभूमिस्फुरितां स्वजं मे स्वयंवरं यज्ञविधानपत्नी।
करोतु यत्नादचलत्वहेतोरितीव मालामुररीकरोमि॥

(यह पढ़कर माला पहिनावे,)

धौतान्तरीयं विधुकान्तिसूत्रैः सद्ग्रन्थितं धौतनवीनशुद्धम्।
नग्नत्वलब्धिर्न भवेच्च यावत् संधार्यते भूषणमूरुभूम्याः॥

(यह पढ़कर अधोवस्त्रका स्पर्श करावे)

संव्यानमञ्चद्दशया विभान्तमखण्डधौताभिनवं मृदुत्वम्।
संधार्यते पीत-सितांशुवर्णमंशोपरिष्टाद्धृतभूषणाङ्कम्॥

(यह पढ़कर दुपट्टाका स्पर्श करावे)

शीर्षण्यशुम्भन्मुकुटं त्रिलोकीहर्षाक्षराज्यस्य च पट्टबन्धम्।
दधामि पापोर्मिकुलप्रहन्तृ रत्नाढ्यमालाभिरलङ्कृताङ्गम्॥

(यह पढ़कर मुकुट बंधवावे)

ग्रैवेयकं मौक्तिकदामधामविराजितं स्वर्णनिबद्धयुक्तम्।
दधेऽध्वरापर्णविसर्पणेच्छुर्महाधनाभोगनिरूपणाङ्कम्॥

(यह पढ़कर कण्ठमें कण्ठाभरण पहिनावे)

मुक्तावलीगोस्तनचन्द्रमालाविभूषणान्युत्तमनाकभाजाम्।
यथार्हसंसर्गगतानि यज्ञलक्ष्मीसमालिङ्गनकृद् दधेऽहम्॥

(यह पढ़कर हार धारण करावे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकत्र भास्वानपरत्र सोमः सेवां विधातुं जिनपस्य भक्त्या ।
रूपं परावृत्य च कुण्डलस्य मिषादवाप्ते इव कुण्डले द्वे ॥

(यह पढ़कर कानोंमें कर्णाभरण धारण करावे)

भुजासु केयूरमपास्तदुष्टवीर्यस्य सम्यक् जयकृद् ध्वजाङ्कम् ।
दधे निधीनां नवकैश्च रत्नैर्विमण्डितं सद्ग्रथितं सुवर्णे ॥

(यह पढ़कर केयूर-बाजूबंद धारण करावे)

यज्ञार्थमेवं सृजतादिचक्रेश्वरेण चिन्हं विधिभूषणानाम् ।
यज्ञोपवीतं विततं हि रत्नत्रयस्य मार्गं विदधाम्यतोऽहम् ॥

(यह पढ़कर यज्ञोपवीत पहिनावे)

अन्यैश्च दीक्षां यजनस्य गाढं कुर्वद्भिरिष्टैः कटिसूत्रमुख्यैः ।
संभूषणैर्भूषयतां शरीरं जिनेन्द्रपूजा सुखदा घटेत ।

(यह पढ़कर कटिसूत्र धारण करावे)

विधेर्विधातुर्यजनोत्सवेऽहं गेहादिमूर्च्छामपनोदयामि ।
अनन्यचेताः कृतिमादधामि स्वर्गादिलक्ष्मीमपि हापयामि ॥

(यह पढ़कर घर गृहस्थीके कार्योंसे उत्सव पर्यन्त निवृत्त रहनेकी प्रतिज्ञा करावे)।

तदनन्तर नीचे लिखे अनुसार मण्डप प्रतिष्ठा करे ।

मण्डपप्रतिष्ठा

इन्द्र चतुर्निकाय देवोंको इस महोत्सवमें अपने २ भाग्य-नियोग-को पूर्ण करने की सूचना करता है ।

चतुर्णिकायामरसंघ एष आगत्य यज्ञे विधिना नियोगम् ।
स्वीकृत्य भक्त्या हि यथार्हदेशे सुस्था भवन्त्वाह्निककल्पनायाम् ॥

(यह पढ़कर मण्डलके सामने पुष्प छोड़े ।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मण्डपमें प्रारम्भ हुए इस धार्मिक महोत्सवमें विघ्न निवारण या कार्यकी सहायताके लिये इन्द्र पञ्चकुमार देवताओंको यथायोग्य कार्योंमें निम्नलिखित प्रकारसे नियुक्त करता है।

आयात मारुतसुराः पवनोद्भटाशाः
संघट्टसंलसितनिर्मलतान्तरीक्षाः ।
वात्यादिदोषपरिभूतवसुन्धरायां
प्रत्यूहकर्मनिखिलं परिमार्जयन्तु ॥२॥

(यह पढ़कर पुष्प छोड़ता हुआ वायुकुमार देवोंका आह्वान करे)

आयात वास्तुविधिषूद्भटसंनिवेशा
योग्यांशभागपरिपुष्टवपुःप्रदेशाः ।
अस्मिन् मखे रुचिरसुस्थितभूषणाङ्के
सुस्था यथार्हविधिना जिनभक्तिभाजः ॥३॥

(यह पढ़कर पुष्प छोड़ता हुआ वास्तुकुमार देवोंका आह्वान करे)

आयात निर्मलनभःकृतसंनिवेशा
मेघाः सुराः प्रमदभारनमच्छिरस्काः ।
अस्मिन्मखे विकृतविक्रियया नितान्ते
सुस्था भवन्तु जिनभक्तिमुदाहरन्तु ॥४॥

(यह पढ़कर पुष्प छोड़ता हुआ मेघकुमारोंका आह्वान करे)

आयात पावकसुराः सुरराजपूज्य-
संस्थापनाविधिषु संस्कृतविक्रियार्हाः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थाने यथोचितकृते परिवद्धकक्षाः
सन्तु श्रियं लभत पुण्यसमानभाजाम् ॥४॥

(यह पढ़कर पुष्प छोड़ता हुआ अग्निकुमार देवोंका आह्वान करे)

नागाः समाविशत भूतलसंनिवेशाः
स्वां भक्तिमुल्लसितगात्रतया प्रकाश्य ।
आशीविषादिकृतविघ्नविनाशहेतोः
सुस्था भवन्तु निजयोग्यमहासनेषु ॥५॥

(यह पढ़कर पुष्प छोड़ता हुआ नागकुमार देवोंका आह्वान करे)

पुरुहूतदिशि स्थितिमेहि करोद्धृतकाञ्चनदण्डगखण्डरुचे ।
विधिना कुमुदेश्वर सव्यशये धृतपङ्कजशङ्कितकङ्कणके ॥ ६ ॥

(यह पढ़कर पूर्व दिशामें पुष्प छोड़कर पूर्वद्वारके प्रतीहारी 'कुमुदेश्वर' को स्थान दे ।)

वामनाशु यमदिग्विभागतः स्थानमेहि जिनयज्ञकर्मणि ।
भक्तिभारकृतदुष्टनिग्रहः पूतशासनकृतामवन्ध्यकः ॥७॥

(यह पढ़ दक्षिण दिशामें पुष्प छोड़ता हुआ दक्षिण दिशाके प्रतीहारी 'वामन' को स्थान दे)

पश्चिमासु विततासु हरित्सु भूरिभक्तिभरभूकृतपीठाः ।
अञ्जनस्वहितकाम्यययाध्वरे तिष्ठ विघ्नविलयं प्रणिधेहि ॥८॥

(यह पढ़कर पश्चिम दिशामें पुष्प छोड़ता हुआ पश्चिम द्वारके प्रतीहारी 'अञ्जन' को स्थान दे ।)

पुष्पदन्तभवनासुरमध्ये सत्कृतोऽसि यत इत्थमवोचम् ।
उत्तरत्र मणिदण्डकराग्रस्तिष्ठ विघ्नविनिवृत्तिविधायी ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(यह पढ़कर उत्तर दिशामें पुष्प छोड़ता हुआ उत्तर द्वारके प्रतीहारी 'पुष्पदन्त' को स्थान दे ।)

करकृतकुसुमानामञ्जलिं संवितीर्य
धनदमणिसुरत्नाधीशपूजार्थसार्थे ।
विकिर विकिर शीघ्रं भक्तिमुद्भाव्य नूनं
निगदतु परमाङ्के मण्डपोर्ध्वावकाशे ॥१०॥

(यह पढ़कर मण्डपके ऊपर सब रङ्गके पुष्पोंसे सहित अक्षत वरसावे ।)

तदनन्तर ओं हूं फट् किरीटि किरीटि घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षां क्षं वः फट् स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर मण्डपकी दशों दिशाओंमें पुष्प अथवा पीले सरसों फेंके ।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र बोलकर मण्डल के चारों कोनों पर फलादिसे भूषित चार मङ्गल कलश स्थापित करे । यदि चार न हों तो कमसे कम एक कलश अवश्य ही स्थापित करे ।

'ओम् अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन्........ मासे........पक्षे........तिथौ........वासरे........वर्षे इह........नगरे जैनेन्द्र-मन्दिरे........कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्र-शुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्न-गन्ध-पुष्पाक्षतादि-बीजपूर-शोभितं मङ्गलकलशस्थापनं करोम्यहम्' क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा ।

कलशके पास ही दीपक प्रज्वलित कर रक्खे । दीपक रखनेके पहले निम्न श्लोक और मन्त्र पढ़े—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम् ।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा ॥

ओं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि ।

इतना सब कर चुकनेके बाद नीचे लिखे अनुसार पूजा आरम्भ करे ।

पूजा-स्थाप

ओम् जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

ओं ह्रीं अनादि मूलमन्त्र ! अत्रावतरावतर सम्वौषट् ।
„ „ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
„ „ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा–अरहंता लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि–अरहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि । ओं नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा ।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपराजितमन्त्रोऽयं सर्वविघ्ननिनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥
एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥
अर्हमित्यक्षरब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥

(यह पढ़कर थालीमें पुष्प छोड़े, तदनन्तर निम्न श्लोक बोलकर नमस्कार मन्त्रको अर्घ चढ़ावे)

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिन मन्त्रमहं यजे ॥

ओम् ह्रीं अनादिमूलमन्त्रायानर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इसके बाद निम्नलिखित अष्टदल कमल पूजाके नौ अर्घ चढ़ावे)

अष्टदल कमलपूजा[1]

अर्हदादिपदाकारमोकारं विन्दुसंयुतम् ।
कामदं मोक्षदं वन्दे कर्मारातिलयप्रदम् ॥१॥

---

१. यह पूजा संकलयिता द्वारा रचित है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं मण्डलमध्यगताय पञ्चपरमेष्ठिरूपाय ओंकारायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानावरणसन्नाशलब्धानन्तसुबोधनम् ।
वन्दे सिद्धं स्वयं सिद्धं कर्मशत्रुविशोधनम् ॥२॥

ओं ह्रीं ज्ञानावरणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दृगावरणसंघातसंचितानन्तदर्शनम् ।
वन्दे सिद्धं जगत्कान्तं भव्यजन्तुविहर्षणम् ॥३॥

ओं ह्रीं दर्शनावरणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वेद्यबाधासमालब्धाव्याबाधत्वमहागुणम् ।
वन्दे सिद्धं स्मराविद्धं क्षीणकर्मद्विपद्गणम् ॥४॥

ओं ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहभूपालभूपातलब्धसम्यक्त्वसन्मणिम् ।
वन्दे मुक्तं गुणैर्युक्तं राजज्ज्ञानदिवामणिम् ॥५॥

ओं ह्रीं मोहनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अवगाहगुणोपेतमायुःकर्मविनाशनात् ।
वन्दे शुद्धं महाबुद्धं सिद्धं त्रैलोक्यदर्शनात् ॥६॥

ओं ह्रीं आयुःकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नामकर्मापहारेण सूक्ष्मत्वगुणशालिनम् ।
वन्दे मुक्तिमहीकान्तं लोकत्रयनिभालिनम् ॥७॥

ओं ह्रीं नामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गोत्रगोत्रविदारेण प्राप्तागुरुलघुत्वकम् ।
वन्दे सिद्धिवधूस्वान्तमहामोहनकारकम् ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्तरायविनाशेन प्राप्तानन्तमहाबलम् ।
वन्दे लोकशिखारूढं लोकातीतं सुनिश्चलम् ॥ ६॥

ओं ह्रीं अन्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

तदनन्तर संस्कृत या हिन्दी भाषाका पञ्चपरमेष्ठी विधान करे। विधान समाप्त होनेपर मङ्गल कलशके जलसे शान्तिधारा करे ।

शान्तिधारा[1]

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीपार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यान-पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय अनन्त दर्शनाय अनन्तवीर्याय अनन्तसुखाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाप्रमुखचतुःसंघोपसर्गविनाशाय घातिकर्मविनाशाय अघातिकर्मविनाशाय अपवादमस्माकं छिन्द २ भिन्द २ मृत्युं छिन्द २ भिन्द २ अतिकामं छिन्द २ भिन्द २ रतिकामं छिन्द २ भिन्द २ क्रोधं छिन्द २ भिन्द २ अग्निं छिन्द २ भिन्द२ सर्वशत्रुं छिन्द २ भिन्द २ सर्वोपसर्गं छिन्द २ भिन्द २ सर्वविघ्नं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द सर्वभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वराजभयं छिन्द २ भिन्द २ भिन्द २ सर्वचोरभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वदुष्टभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वमृगभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वपरमन्त्रं छिन्द २ भिन्द २ सर्वमामयभयं छिन्द २ भिन्द सूर्वशूलभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वक्षयरोगं छिन्द २ भिन्द २ सर्वकुष्ठरोगं

---

१ यह शान्ति धारा दि० जैनव्रतोद्यापनसंग्रहसे उद्धृत की गई है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छिन्द २ भिन्द २ सर्वज्वरमारीं छिन्द २ भिन्द सर्वगजमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वाश्वमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वगोमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वमहिषमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वधान्यमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्ववृक्षमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वगुल्ममारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वपत्रमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वपुष्पमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वफलमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वराष्ट्रमारीं२छिन्द२भिन्द सर्वदेश-मारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वविषमारीं छिन्द २ भिन्द २ सर्वक्रूररोगं छिन्द २ भिन्द २ सर्ववेतालशाकिनीभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्ववेदनीयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वमोहनीयं छिन्द २ भिन्द २ ओं सुदर्शनमहाराज चक्र-विक्रम-तेजो-बल-शौर्य-शान्ति कुरु कुरु सर्वजनानन्दनं कुरु कुरु सर्वभव्यानन्दनं कुरु कुरु सर्वगोकुला-नन्दनं कुरु कुरु सर्वग्राम-नगर-खेट-खर्वट-मटम्बनपत्तन-द्रोणामुख-सहानन्दनं कुरु कुरु सर्वलोकानन्दनं कुरु कुरु सर्वदेशानन्दनं कुरु कुरु सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु शीघ्रं व्याधि-व्यसनवर्जितं अभयक्षेमारोग्यं स्वस्ति अस्तु शान्तिरस्तु शिवमस्तु कुलगोत्रधनं धान्यं सदास्तु चन्द्रप्रभ वासुपूज्य मल्लि वर्धमान पुष्पदन्त शीतल मुनिसुव्रत नाथ पार्श्वनाथ परमदेवाः सदा शान्ति कुर्वन्तु कुर्वन्तु ।

शान्तिधाराके बाद शान्ति-विसर्जन स्तुति और परिक्रमा कर विधानका काम समाप्त करना चाहिये ।

सूचना—रात्रिको आरती भजन शास्त्र प्रवचन तथा विद्वानोंके भाषण आदिके द्वारा धर्मकी प्रभावनी करना चाहिये ।

(इस प्रकार प्रथम दिनकी विधि पूर्ण हुई)

द्वितीय दिनका कर्तव्य

द्वितीय दिन प्रातःकाल मण्डपमें इन्द्रोंके द्वारा देवाधिदेव जिनेन्द्र भगवान्‌का अभिषेक विशेष समारोहके साथ किया जाना चाहिये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माघनन्दिमुनिकृत-अभिषेक पाठ*

श्रीमन्नतामरशिरस्तटरत्नदीप्ति-
तोयावभासिचरणाम्बुजयुग्ममीशम् ।
अर्हन्तमुन्नतपदप्रदमाभिनम्य
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये ॥१॥

अथ पौर्वाह्निकदेववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तववन्दनासमेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(यह पढ़कर नौ वार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः ।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा-
त्तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि ॥२॥

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्तिं
सेन्द्राः सुरासमदवारणगाः स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्ध्या
पुष्पाञ्जलिं मलयजातमुपाक्षिपेऽहम् ॥३॥

(यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि छोड़कर अभिषेककी प्रतिज्ञा करे)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः श्रीप्रस्तरे पूर्णशशाङ्ककल्पे ।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ॥४॥

---

* यह अभिषेकपाठ सर्व प्रथम पं० मोतीलाल जी वर्णी की ह० ल० पुस्तकसे संकलित किया गया था ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीलेखनं करोमि ।

(यह पढ़कर अभिषेककी थालीमें केशरसे श्री लिखे ।

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम् ।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि ।

(यह पढ़कर सिंहासन स्थापित करे)

भृङ्गारचामरसुदर्पणपीठकुम्भ-
तालध्वजातपनिवारकभूषिताग्रे ।
वर्धस्व नन्द जय पाठपदावलीभिः
सिंहासने जिनभवन्तमहं श्रयामि ॥६॥

वृषभादिसुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान् ।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम् ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ ! भगवन्निह पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

(यह पढ़कर प्रतिमा विराजमान करे ।)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः
क्षीराब्धिवारिभिरपूरयदर्थकुम्भान् ।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रे ॥८॥

शातकुम्भीयकुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नानचन्दनादिसुचर्चितान् ॥९॥

ओं ह्री चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि ।

(यह पढ़कर चार कोनोंमें चार कलश रखे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनन्दनिर्भरसुरप्रमदादिगानै
वादित्रपूरजयशब्दकलप्रशस्तैः ।
उद्गीयमानजगतीपतिकीर्तिमेनां
पीठस्थलीं वसुविधार्चनयोल्लसामि ॥१०॥

ओं ह्रीं स्नपनपीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे, वादित्र नाद तथा जय जय शब्दका उच्चारण करे)

कर्मप्रबन्धनिगडैरपि हीनताप्तं
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम् ।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्त्वम् ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

(यह पढ़कर अभिषेक करे)

तीर्थोत्तमभवै र्नीरैः क्षीरवारिधिरूपकैः ।
स्नपयामि जन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान् ॥१२॥

ओं ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा ।

(यह पढ़ते हुए कलश से १०८ धारा छोड़े)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः ।
यदभिषवनवारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां
प्रभवति विदधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम् ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं द्वीं द्वीं द्रा द्रां द्रीं द्रीं हं झं झ्वीं झ्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्र ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि ।

(यह पढ़कर कोनोंमें रखे हुए चार कलशोंसे अभिषेक करे)

पानीयचन्दनसदक्षतपुष्पपुञ्ज-
नैवेद्यदीपकसुधूपफलव्रजेन ।
कर्माष्टकक्रथनवीरमनन्तशक्ति
संपूजयामि महसा महसां निधानम् ॥१४॥

ओं ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

हे तीर्थपा निजयशोधवलीकृताशाः
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम् ।
सद्द्रव्यहृज्जनितपङ्कजबन्धकल्पा
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु ॥१५॥

(यह पढ़कर शान्तिके लिये पुष्पाञ्जलि छोड़े)

नत्वा मुहुर्निजकरैरमृतोपमेयैः
स्वच्छैर्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये
देहे स्थितान् जलकणान्परिमार्जयामि ॥१६॥

ओं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(यह पढ़कर प्रतिमाजीको शुद्ध और स्वच्छ वस्त्रसे पोंछे)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
जिघृक्षुरिष्टिमिन तेऽष्टतयीं विधातुं
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि ॥१७॥

(यह पढ़कर प्रतिमाको सिंहासन पर विराजमान करे)

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः ।
फलैरर्घैर्जिनमर्चे जन्मदुःखापहानये ॥१८॥

ओं ह्रीं पीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च
व्यात्युक्षणेन हरतादघसंचयं मे ।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्
भूयाद् भवातपपहरं धृतमादरेण ॥१९॥

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवीराज्याभिषेकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंवृद्धिसंपादकं
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकम् ।१०।

(यह पढ़कर गन्धोदक शिरपर लगावे)

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते ।
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मदीयाद् भल्लाटादशुभकर्माटनमभूत् ।
सदेहक् पुण्यार्हन् मम भवतु ते पूजनविधौ ॥२१॥

(यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि छोड़े)

अभिषेकके बाद विनयपाठ बोले और उसके बाद सामूहिक रूपसे नित्यपूजा करे तथा यागमण्डलविधान करे। पूजाके बाद शान्ति, विसर्जन, स्तुति तथा परिक्रमा करे।

घटयात्रा और नगरकीर्तन

मन्दिर, वेदी तथा कलशाकी शुद्धिके लिये तीर्थजलकी आवश्यकता होती हैं। अतः किसी जलाशय पर गाजे बाजेके साथ जाकर जल लाना चाहिये। इस कार्यके लिये कमसे कम ९ और अधिक से अधिक ८१ घटोंका भरना बतलाया है। मालव आदि प्रान्तमें १०८ या २१, ४१, आदि कलश ले जाते है। घटोंको तूल तथा नारियल आदिसे बाँधकर इन्द्र इन्द्राणी तथा अन्य स्त्री-पुरुषोंके द्वारा जलाशय पर ले जाना चाहिये। वहाँ पीले पुष्पों अथवा पञ्चरङ्गोंसे रंगे चावलोंसे ८१ खण्डका एक मण्डल बनाना चाहिये। एक चौकोर मण्डल बनाकर उसमें नौ नौके नौ खण्ड बना देनेसे ९×९=८१ खण्डका मण्डल अनायास बन जाता है। उन सबमें एक-एक छोटा स्वस्तिक अथवा पूरे मण्डलमें एक बड़ा नन्द्यावर्त स्वस्तिक बनाकर उस पर सब घट रख देवें। चौकोर मण्डल के सामने एक नौ कलिकाओंका कमल बनावे और उसमें अरहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनशास्त्र, जिन गुरु, जिन प्रतिमा और जिन मन्दिर इन नौ देवोंकी स्थापना कर नव देवपूजन करे।

एक बड़े बर्तन या पतीलीमें जल छान कर भरवावे। उसमें लवंगका चूर्ण मिला दे जिसमें अन्तर्मुहूर्त बाद फिरसे छाननेकी आवश्यकता न रहे। एक छोटी रकेबीमें केशरसे परिशिष्ट में लिखा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल यन्त्र बनाने अथवा ताम्रपत्र आदि पर यन्त्र बना हो तो उसे उसी वर्तनमें डाल देवें। तदनन्तर वह जल साथमें लाये हुए घटोंमें भर ले। जल भरते समय निम्न लिखित मन्त्र बोले—

'ओं ह्रीं श्री ही धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी शान्ति पुष्टयः श्रीदिक्कुमार्यो कलशमुखेष्वेतेषु नित्यविशिष्ठा भवत भवतेति स्वाहाः'

गङ्गादयः श्रीप्रमुखाश्च देव्यः

श्रीमागधाद्याश्च समुद्रनाथाः।

ह्रदेशिनोऽन्येऽपि जलशयेशा

स्तेसारयन्त्वस्य जिनोचिताम्भः॥

यह श्लोक बोल कर जलाशयके तट पर पुष्प बिखेरे। तदनन्तर प्रारम्भमें छपा मङ्गलपञ्चक अथवा मङ्गलाष्टक बोल कर घटों पर पुष्प बिखेरे। यहाँ यदि समय हो तो आगे लिखे ८१ श्लोकों द्वारा उनके मन्त्रोंको चतुर्थ्यन्त (ओं ह्रीं इन्द्रकलशायार्घं निर्वपामीति स्वाहा) बदलकर कलशपूजन करे। अन्यथा समुदायरूपमें एक अर्घ चढ़ाकर यह श्लोक बोले। फिर कलश उठाकर जिस प्रकार ले आये थे उसी प्रकार वापिस ले जावे।

तीर्थेनानेनतीर्थान्तरदुरधिप्रामोदारदिव्य प्रभाव—

स्फूर्जत्तीर्थोत्तमस्य प्रथितजिनपतेः प्रेषितप्राभृताभान्।

श्रीमुख्यख्यातदेवीनिवहकृतमुखाद्यासनोद्भूतशक्ति—

प्रागल्भ्यानुद्धरामो जय जय निनदे शातकुम्भीयकुम्भान्।

यदि कलशारोहण होना है तो इन्द्र उस कलशको साथमें लेकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चले। हाथी मिल सकता है तो इन्द्र-इन्द्राणियाँ कलश लेकर उस पर बैठें तथा नगरके खास खास मार्गोमें प्रभावनाके साथ घूमकर नगर कीर्तन करें। नगर कीर्तनके समय प्रतिष्ठाचार्य मनमें शान्ति-मन्त्रका उच्चारण करता हुआ सब ओर पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकता रहे। जुलूसके अन्य स्त्री पुरुष मधुर स्वरसे स्तुति आदि पढ़ते जावें।

वापिस आनेपर यदि मन्दिर प्रतिष्ठा है तो मन्दिरकी शिखर पर, वेदी प्रतिष्ठा है तो वेदीपर और कलशारोहण है तो एक थालीमें कलशको रखकर उसपर नीचे लिखे श्लोक व मन्त्र बोलकर वह जल डालना चाहिये। मन्दिर शुद्धि आदिकी विधि यह है कि एक इतना बड़ा दर्पण रक्खा जाय जिसमें शिखर सहित मन्दिरका प्रतिबिम्ब आ जाय। फिर मन्दिरके प्रतिबिम्ब सहित दर्पणके सामने देखते हुए एक पात्रमें प्रत्येक घटसे एक एक धारा देवे, यदि एक साथ तीनों कार्य हों तो तीनोंकी शुद्धि भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंके द्वारा एक साथ कर लेना चाहिए।

शुद्धि विधान

८१ कलशोंके श्लोक और मन्त्र इस प्रकार हैं:—

कुम्भमिन्द्राह्वयं दिव्यमिन्द्र शस्त्रसमप्रभम्।
ऐन्द्रपुष्पैः समर्चामि नवार्हद्भवनोत्सवे ॥१॥

ओं ह्रीं इन्द्रकलशेन मन्दिर (वेदिका····कलश···) शुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१॥

अग्निज्वालासमानाभमग्न्याख्यं बहुलाक्षतैः।
पूजयामि जिनागारस्नानाय सुखहेतवे ॥२॥

ओं ह्रीं अग्निकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यमदण्डसमानाभमलौकिकमणिश्रितम् ।
यमाख्ययमदिक्पालमान्यं संचर्चयेऽनघम् ॥३॥
ओं ह्रीं यमकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३॥
नैऋत्याख्यं महाकुम्भं नैऋत्याधिपरक्षितम् ।
संशब्दये जिनागारं स्नानाय मधुरस्तवैः ॥४॥
ओं ह्रीं नैऋत्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४॥
वरुणाख्यं घटं दिव्यं वरुणासुररक्षितम् ।
संशब्दये जिनेन्द्रस्य वेश्मस्नानाय चम्पकैः ॥५॥
ओं ह्रीं वरुणकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५॥
पवनामरसंसेव्यं पवनामरसुरक्षितम् ।
पवनाख्यं घटं नीर-गन्धप्रसूनशालिजैः ॥६॥
ओं ह्रीं पवनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६॥
कुबेराख्यं घटं दिव्यं कुबेरगृहशोभितम् ।
जिनवेश्मप्लवायात्र समाह्वये कदम्बकैः ॥७॥
ओं ह्रीं कुबेरकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७॥
ईशानाख्यमुदाधारमीशादिदिग्विभासितम् ।
ओं ह्रीं तिष्ठेद्विधानेन काश्मीरैस्तन्महे मुदा ॥८॥
ओं ह्रीं ईशानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥८॥
कुम्भं गारुन्मताह्वानं गरुन्मणिविनिर्मितम् ।
सरसैर्दिव्यपूजाद्यैः श्रये जैनमहोत्सवे ॥९॥

---

* यह विधान श्री ब्र० दरवारीलालजी कटनी और पं० बालचन्द्र जी की ह० लि० प्रतियोंसे लिया गया है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं गारुत्मतकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥९॥

कलशं सुन्दराकारं वैडूर्यमणिनिर्मितम् ।
दिव्यं मरकताभिख्यं स्थापयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥१०॥

ओं ह्रीं मरकतमणिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१०॥

गाङ्गेयनिर्मितं कुम्भं गाङ्गेयाख्यं महोन्नतम् ।
गङ्गाघनरसापूर्णं पूजयेऽर्हत्सुवेश्मनि ॥११॥

ओं ह्रीं गाङ्गेयकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥११॥

प्रतप्तहाटकैः स्पष्टं श्रीमद्धाटकसंज्ञकम् ।
कुम्भं तीर्थजलापूर्णमर्चयामि यथाविधि ॥१२॥

ओं ह्रीं हाटककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१२॥

हिरण्याख्यं महाकुम्भं हिरण्येन समर्जितम् ।
ललत्पङ्कजमालाढ्यं यजेऽर्हत्सद्मसंमहे ॥१३॥

ओं ह्रीं हिरण्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१३॥

कनत्कनकसंकाशं नानामणिविमण्डितम् ।
यजेऽर्हन्मन्दिरे कुम्भं शुद्धनीरसमाश्रितम् ॥१४॥

ओं ह्रीं कनककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१४॥

अष्टापदाख्यं सत्कुम्भं हेमरत्नकप्रविराजितम् ।
चीरोदवारिसंपूर्णमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥१५॥

ओं ह्रीं अष्टापदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१५॥

महारजतनामाढ्यं महारजतनिर्मितम् ।
तीर्थाम्बुपूरनिभृतमर्हद्गेहेऽर्चये मुदा ॥१६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं महारजतकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१६॥

आनन्ददायकं दिव्यं सानन्दाख्यं मनोहरम् ।
नित्यं तीर्थजलैः पूर्णं स्थापये चैत्यसंमहे ॥१७॥

ओं ह्रीं आनन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१७॥

नन्दाख्यं नन्दनोत्कृष्टं प्रणन्दितगमं जितम् ।
कुम्भं समर्चये दिव्यं नानामणिनिर्मितम् ॥१८॥

ओं ह्रीं नन्दनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१८॥

कुम्भं विजयनामानं विजयोर्जितविश्वकम् ।
पूर्णं तीर्थजलैर्दिव्यमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥१९॥

ओं ह्रीं विजयकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१९॥

नानातीर्थजलाकीर्णं कुम्भं त्वजितनामकम् ।
मानये विविधार्हाभिः स्मरजिन्मन्दिरोत्सवे ॥२०॥

ओं ह्रीं अजितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२०॥

अपराजितनामानं घटं काञ्चनसंनिभम् ।
संप्रतिष्ठापये चैत्यमहे जलसुमाक्षतैः ॥२१॥

ओं ह्रीं अपराजितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२१॥

महोदरं शतानन्दनामधेयं प्रभास्वरम् ।
कलशं कमलैः पूर्णं प्रार्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥२२॥

ओं ह्रीं शतानन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२२॥

सह स्नानदसत्ख्याति पद्मादितीर्थसंभृतम् ।
पुष्पमालावृतं कुम्भं महाम्यर्हद्गृहक्षणे ॥२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं स्नानदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२३॥

कुन्दाख्यं कुन्दपुष्पाढ्यं कुन्दस्त्रक्प्रविराजितम् ।
प्रार्चये कुन्दपुष्पौघैः कुम्भं भव्यजिनालये ॥२४॥

ओं ह्रीं कुन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२४॥

प्रस्फुटन्मल्लिकापुष्पसमूहामोदवासितैः ।
नीरैः पूर्णं यजे हेममल्लिकाख्यं महाघटम् ॥२५॥

ओं ह्रीं मल्लिकाख्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२५॥

अपूर्वचम्पकामोदप्रवासितजलैर्भृतम् ।
चम्पकाख्यं घटं दिव्यं सूत्रितं सम्यगर्चये ॥२६॥

ओं ह्रीं चम्पककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२६॥

कदम्बरजसाव्याप्तकदम्बाख्यं महाघटम् ।
उपात्तिप्तविधानेनार्चये जैनगृहाप्तये ॥२७॥

ओं ह्रीं कदम्बकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२७॥

मन्दाराख्यं महाकुम्भं मन्दारस्त्राग्विभूषितम् ।
दिव्यैरर्चामि मन्दारैः प्रत्यग्रजिनमन्दिरे ॥२८॥

ओं ह्रीं मन्दारकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२८॥

प्रत्यग्रपारिजातौघसमर्चितजलैर्भृतम् ।
पारिजाताभिधं कुम्भमर्चयामि पयोभरैः ॥२९॥

ओं ह्रीं पारिजातकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२९॥

संतानपल्लवोत्फुल्लप्रसूननिकरार्चितम् ।
संतानाख्यं जलैः पूर्णं संस्थाप्यापूजयेऽनिशम् ॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं सन्तानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३०॥

हरिचन्दनपुष्पाभं हरिचन्दनसंज्ञकम् ।
हरिचन्दनकर्पूरैः कुम्भं संप्रार्चये मुदा ॥३१॥

ओं ह्रीं हरिचन्दनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३१॥

कल्पवृक्षमहापुष्पप्रकरेण प्रसाधितम् ।
कल्पवृक्षाभिधं कुम्भं पूजनाय प्रकल्पये ॥३२॥

ओं ह्रीं कल्पवृक्षकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३२॥

जपाख्यं जपदामाभं जपापुष्पाख्यवालकम् ।
यजे जगत्प्रभोर्नव्यचैत्यस्नानाय केवलम् ॥३३॥

ओं ह्रीं जपाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३३॥

विशालाख्यं घटं दिव्यं विशालं रत्ननिर्मितम् ।
विशालयामि पुष्पौघैः कुन्दमन्दारसंभवैः ॥३४॥

ओं ह्रीं विशालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३४॥

कुम्भं श्रीभद्रकुम्भाख्यं भद्रेभकुम्भसुन्दरम् ।
पारिभद्रप्रसूनौघैः शोभयामि मनोहरैः ॥३५॥

ओं ह्रीं भद्रकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३५॥

घटं श्रीपूर्णकुम्भाख्यं पूर्णकुम्भमिवोन्नतम् ।
क्षीरोदनीरसंपूर्णैः सुरत्नैर्वर्णयाम्यहम् ॥३६॥

ओं ह्रीं पूर्णकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयन्तं सर्वकुम्भानां जयनाख्यं महाघटम् ।
विक्रसज्जयपुष्पौघैः संयजामि तदुत्सवे ॥३७॥

ओं ह्रीं जयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३७॥

वैजयन्ताभिधं कुम्भं सत्यं विजयदायकम् ।
नव्यप्रासादचर्यार्थैश्चर्चयेऽहं वनादिभिः ॥३८॥

ओं ह्रीं वैजयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३८॥

चन्द्रकान्तमहारत्नविनिर्मितमहाघटम् ।
चन्द्राख्यं जगदुत्कृष्टं पूजये विविधार्चनैः ॥३९॥

ओं ह्रीं चन्द्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३९॥

सूर्यकान्ताश्मसन्दोहविराजितं महोदयम् ।
सूर्याख्यं कुम्भमुत्कृष्टैः प्रयजे तन्महार्घकैः ॥४०॥

ओं ह्रीं सूर्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४०॥

लोकालोकप्रविख्यातं लोकालोकविधानकम् ।
कुम्भं संस्थापयाम्यत्र संपूज्य विविधार्चनैः ॥४१॥

ओं ह्रीं लोकालोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४१॥

त्रिकूटनामकं कुम्भं त्रिकूटाद्रिसमानकम् ।
समर्च्य विविधार्घेण स्थापये तन्महोत्सवे ॥४२॥

ओं ह्रीं त्रिकूटकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४२॥

उदयाख्यं महाकुम्भंमुदयाचलसन्निभम् ।
स्थापयामि जिनागारेऽभिषवाय महोन्नतिम् ॥४३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं उदयाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४३॥

हिमवत्पर्वताभिख्यं हिमाचलसमुन्नतिम् ।
कुटं निवेशयाम्यत्र स्नानाय नव्यवेश्मनः ॥४४॥

ओं ह्रीं हिमाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४४॥

निषधाद्रिसमोत्सेधं निषधाख्यं घटं वरम् ।
संविधायार्हणां दिव्यां स्थापयेऽर्हन्महोत्सवे ॥४५॥

ओं ह्रीं निषधकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४५॥

माल्यवत्कुम्भनामानं नानामालाविराजितम् ।
शुद्धस्फटिकसंकाशं कुम्भं तत्र निवेशये ॥४६॥

ओं ह्रीं माल्यवत्कलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥०६॥

सत्पारिपात्रकोत्सेधं सत्पारिपात्रकाह्वयम् ।
कलशं श्रीजिनागारस्नानाय पूजयेऽनघम् ॥४७॥

ओं ह्रीं सत्पात्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४७॥

गन्धमादननामानं गन्धमादप्रपूरितम् ।
समाह्वये जलाद्यर्घैर्जिनौकःस्नानहेतवे ॥४८॥

ओं ह्रीं गन्धमादनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४८॥

सुदर्शनसमाह्वानं सुदर्शनगरिष्ठकम् ।
कलशं विशुद्धये जैनवेश्मनः स्थापयेऽनघम् ॥४९॥

ओं ह्रीं सुदर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४९॥

कलशं मन्दराकारं मन्दराख्यं महोन्नतिम् ।
विधापयामि जैनेन्द्रभवनस्नानहेतवे ॥५०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं मन्दरकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५०॥

अचलेत्यभिधना पूर्णमचलाख्यं घटं नवम् ।
आम्रपल्लवशोभाढ्यं तदर्थं स्थापयाम्यहम् ॥५१॥

ओं ह्रीं अचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५१॥

विद्युन्मालासमाकारं विद्युन्माल्यभिधानकम् ।
कलशं स्थापये दिव्यं नानापूजनवस्तुभिः ॥५२॥

ओं ह्रीं विद्युन्मालिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५२॥

चूड़ामण्याख्यमुत्तुङ्गं चूड़ामणिसमुन्नतिम् ।
पूर्णं तीर्थोदकैः कुम्भं तदुत्सवे निधापये ॥५३॥

ओं ह्रीं चूड़ामणिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५३॥

सद्धारगुलिकाभालं गुलिकाह्वयमुत्तमम् ।
कुम्भं निवेशयाम्यत्र जैनमन्दिरशुद्धये ॥५४॥

ओं ह्रीं गुलिकाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५४॥

दक्षिणावर्तनामानं दक्षिणावर्तसन्निभम् ।
घटं च घटितंलक्ष्म्या तत्कृते सन्निवेशये ॥५५॥

ओं ह्रीं दक्षिणावर्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५५॥

कोकाख्यं कोकसंकाशं वारिजाश्मविनिर्मितम् ।
घटंनिधापये जैन वेश्मनः शुद्धहेतवे ॥५६॥

ओं ह्रीं कोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥ ५६ ॥

राजहंससमानाभं राजहंससमाह्वयम् ।
घटं तं जाघटीम्यत्र नवार्हद्वेश्मशुद्धये ॥५७॥

ओं ह्रीं राजहंसकलशेन मन्दिशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥ ५७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलशं हरिताभिख्यं हरिताश्मविनिर्मितम ।
पूजयेद्दिव्यरत्नेन दिव्यगन्धाम्बुचम्पकैः ॥५८॥

ओं ह्रीं हरितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५८॥

मृगेन्द्राह्वयमुत्तुङ्गं समाह्वायार्चनादिभिः ।
मृगेन्द्रवत्प्रगर्जन्तं स्नानकालेषु वेश्मनः ॥५६॥

ओं ह्रीं मृगेन्द्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५६॥

कुम्भं कोकनदाकारं श्रीमत्कोकनदाह्वयम् ।
त्रिभङ्गानीरसंपूर्णं घटयेऽस्मिन्महोत्सवे ॥६०॥

ओं ह्रीं कोकनदककशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६०॥

स्निग्धाञ्जनसमाकारमणि निर्मितमुत्तमम् ।
कालाख्यं कलशं हृद्यं तदुत्सवे निवेशये ॥६१॥

ओं ह्रीं कालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६१॥

पद्माख्यं पद्मचक्राख्यं पद्मरागविनिर्मितम् ।
कुम्भं समाह्वये नव्यप्रसादस्नपनाय वै ॥६२॥

ओं ह्रीं पद्मकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६२॥

अत्यन्तश्यामलाकारप्रस्तरैर्निर्मितं घटम् ।
प्रासादस्नानकालेऽत्र महाकालं निवेशये ॥६३॥

ओं ह्री महाकालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६३॥

पञ्चप्रकारसद्रत्नविनिर्मितं महोन्नतम् ।
कलशं सर्वरत्नाख्यं स्नानाय श्रीजिनौकसः ॥६४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं सर्वरत्नकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६४॥

पाण्डुकाकारपाषाणनिर्मितं पाण्डुकाह्वयम् ।
कुम्भं तीर्थोदसंपूर्णं निवेशये, यथाविधि ॥६५॥

ओं ह्रीं पाण्डुकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोम्यहम् ॥६५॥

नैःसर्पकाङ्कलाकारमणिनिर्मितमुन्नतम् ।
कुम्भं स्थापयाम्यत्र तीर्थवारिप्रपूरितम् ॥६६॥

ओं ह्रीं नैसर्पकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६६॥

मानवाख्यं घटं नव्यमानये तीर्थवाभृतम् ।
स्थापयेऽर्हन्महावेश्मस्नपनाय जलार्जितम् ॥६७॥

ओं ह्रीं मानवकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६७॥

शङ्खसंकाशरत्नौघ विनिर्मितमहोन्नतिम् ।
संस्थाप्य पूजये दिव्यं शङ्खाख्यं जलचन्दनैः ॥६८॥

ओं ह्रीं शङ्खनिधिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६८॥

पिङ्गलाख्यं च पिङ्गाभं पिङ्गाश्मभिर्विनिर्मितम् ।
घटं तीर्थाम्बुसंपूर्णं तदर्थं सन्निधापये ॥६९॥

ओं ह्रीं पिङ्गकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६९॥

पुष्करावर्तनामानं कलशं रत्ननिर्मितम् ।
जिनोद्वासितस्नानालोकं संकल्पयाम्यहम् ॥७०॥

ओं ह्रीं पुष्करावर्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७०॥

मकरध्वजनामानमिन्द्रनीलविधापितम् ।
कुटं गङ्गाम्बुपर्याप्तं पवित्रं स्थापयेद्वरम् ॥७१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं मकरध्वजकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७१॥

ब्रह्माभिख्यं चतुर्वक्त्रं कुम्भं ब्रह्मसमर्चितम् ।
ब्रह्मतीर्थजलैःपूर्णं स्थापयेनीरचन्दनैः ॥७२॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७२॥

सुवर्णनिर्मितं कुम्भं सुवर्णाख्यं महासुखम् ।
स्फुरद्रत्नचयं चारुं संस्थाप्याहं समर्चये ॥७३॥

ॐ ह्रीं सुवर्णकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७३॥

कदलीपत्रसंकाशं नीलाश्मकमयं घटम् ।
स्थापयामीन्द्रनीलाख्यं संभृततीर्थवारिणा ॥७४॥

ॐ ह्रीं इन्द्रनीलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७४॥

अशोककुसुमामोदवासिताम्भःप्रपूरितम् ।
अशोकाख्यंमहाकुम्भं निधापये जिनौकसाम् ॥७५॥

ॐ ह्रीं अशोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७५॥

पुष्पदन्तसमानाभं पुष्पदन्तसमाह्वयम् ।
कलशं सलिलैः पूर्णं संस्थापयेऽर्हन्मन्दिरे ॥७६॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७६॥

कुमुदाख्यं घटं नव्यं कुमुदस्रग्विराजितम् ।
कुमुदैरर्चये स्नाने संस्थाप्य श्रीजिनौकसः ॥७७॥

ॐ ह्रीं कुमुदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७७॥

येषु दृष्टेषुभव्यानां सम्यक्त्वं प्रकटीभवेत् ।
दर्शनाख्यं महाकुम्भं संभावये जलादिभिः ॥७८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं दर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७८॥

यस्य दर्शनमात्रेण धर्मोऽधर्मः प्रबुध्यते ।
कुम्भं ज्ञानाख्यमुत्तुङ्गं निवेशये जलैर्भृतम् ॥७९॥

ओं ह्रीं ज्ञानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७९॥

दर्शनाद्यस्य भव्यानां वृत्ते मतिः प्रजायते ।
चारित्राख्यं वनैःपूर्णं कुम्भं संस्थापये मुदा ॥८०॥

ओं ह्रीं चारित्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमोति स्वाहा ॥८०॥

सर्वार्थसिद्धिकर्तारं सर्वार्थसिद्धिनामकम् ।
कुम्भं समर्चये जैनवेश्मनः स्नानहेतवे ॥८१॥

ओं ह्रीं सर्वार्थसिद्धिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥८१॥

इस प्रकार ८१ कलशों के द्वारा शुद्धि करने के बाद निम्न मन्त्रों द्वारा शुद्धि करे।

'ओं ह्रीं वायुकुमार सर्वविघ्नविनाशनाय महीपूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा'
(यह मन्त्र बोलकर वेदीपर दर्भकी बनी कूर्चिका से मार्जन करे)

ओं ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं यः क्षः फट् स्वाहा'।
(यह मन्त्र पढ़कर दर्भकी कूर्चिका से वेदीपर जल छींटे)

'ओं रं अग्निकुमार भूमिं ज्वलय ज्वलय अं हं सं वं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा'
(यह मन्त्र पढ़कर कपूर जलाकर वेदीपर डाले और उसे दर्भकी कूर्चिकासे सब जगह चलावे)

'ओं हूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय परमन्त्रान् सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द'
(यह मन्त्र पढ़कर मन्दिर की दशों दिशाओं में पुष्प फेंके।

सूचना—वेदी यदि कच्ची हो अथवा अधिक जल निकलनेका मार्ग न हो तो थोड़ा-थोड़ा जल डालकर शुद्धिकर लेना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथवा दर्पणमें प्रतिबिम्ब देखकर यह विधि करे। शुद्धि के बाद घटोंका जल अलगकर देना चाहिये।

रात्रिका समय नृत्य संगीत, शास्त्रप्रवचन तथा विद्वानों के भाषण आदिमें व्यतीत करना चाहिये।

(इस प्रकार द्वितीय दिनकी विधि पूर्ण हुई।)

तृतीय दिनका कर्तव्य

प्रातःकाल गत दिवसके समान समारोहके साथ श्रीजिनेन्द्रदेव का अभिषेक तथा नित्य पूजा करे। तदनन्तर मन्दिर प्रतिष्ठा, वेदी-प्रतिष्ठा और कलशारोहणकी अवशिष्ट क्रिया निम्नलिखित विधिसे पूर्ण करे—

प्रत्यूहनिर्णाशविधौ प्रसिद्धं गणेन्द्रवक्त्राम्बुजगीतकीर्तिम्।
यन्त्रं पुरापूजितमत्रनेयं पात्रे लिखित्वापि कृतार्चनादि ॥

(यह पढ़कर विनायक यन्त्र वेदीपर लाकर विराजमान करे यदि विनायक यन्त्र न हो तो केशरसे बना लेना चाहिये तदनन्तर नीचे लिखा मन्त्र बोले—

'ओं जय जय जय निस्सही निस्सही निस्सही वर्धस्व वर्धस्व, स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति वर्द्धतां जिनशासनम्। णमो अरहंताणं णमो-सिद्धाणं णमो आइरीयाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व-साहूणं। चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलि पण्णत्तो धम्मोमंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमो। चत्तारि-सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि' ।

(यह मन्त्र बोलकर वेदी पर पुष्प छोड़े)

(तदनन्तर नीचे लिखी आचार्य भक्ति और श्रुतभक्ति का पाठ करे।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य भक्ति

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता ।
तुम्हं पायपयोरुहमिह मंगलत्थिमे णिच्चम् ॥१॥
सगपरसमयविदण्हू आगमहेदूहिं चावि जाणित्ता ।
सुसमच्छा जियवयणे विणएण सुताणुरूवेण ॥२॥
बालगुरुबुड्ढसेहे गिलाणथेरेयखमणसंजुत्ता ।
अट्ठावयग्गअण्णे दुस्सीले चापि जाणित्ता ॥३॥
वयसमिदिगुत्तिजुत्ता मुत्तिपहे ठावया पुणो अण्णे ।
अज्झावय गुणणिलया साहुगुणेणावि संजुत्ता ॥४॥
उत्तमखमाइ पुढवी पसण्णभावेण अच्छजलसरिसा ।
कम्मिंधणदहणादो अगणी वाऊ असंगादो ॥५॥
गयणमिव णिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुणिवसहा ।
एरिसगुणणिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो ॥६॥
संसारकाणणे पुण वंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं ।
णिव्वाणस्स दु मग्गो लद्धो तुम्हं पसाएण ॥७॥
अविसुद्धलेसरहिया विसुद्धलेसेहिं परिणदा सुद्धा ।
रुद्दट्टे पुणचत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता ॥८॥
ओग्गह ईहावायाधारणगुणसंपएहिं संजुत्ता ।
सुत्तत्थभावणाए भावियमाणेहिं वंदामि ॥९॥
तुम्हे गुणगणसंथुदि अजाणमाणेण जं मए वुत्ता ।
दिंतु मम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इच्छामिभंते आइरियभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचरित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आयरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्तिहोऊ मज्झं।

(नौ वार णमोकार मन्त्र पढ़ कर कायोत्सर्ग करे)

श्रुतभक्ति

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं विशालं
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं
भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसरम् ।१
जिनेन्द्रवक्त्रप्रविनिर्गतं वचो यतीन्द्रभूतिप्रमुखैर्गणाधिपैः ।
श्रुतंधृतंतैश्चपुनः प्रकाशितं द्विषट्प्रकारं प्रणमाम्यहं श्रुतम् ।।२
कोटीशतं द्वादशचैव कोटचो लक्षाण्यशींतिस्त्र्यधिकानि चैव ।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेतच्छ्रुतं पञ्चपदं नमामि ।।३।।
अङ्गबाह्यश्रुतोद्भूतान्यक्षराण्यक्षराम्नये ।
पञ्चसप्तैकमष्टौ च दशाशीतिं समर्चये ।।४।।
अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवहिं सिरसा ।।५।।

इच्छामि भंत्ते सुदभत्तिं काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ अंगोवंगपइण्णयपाहुअपरियम्मसुत्तपढमाणुओयपुव्वगयचूलिया चेव सुत्तत्थयत्थुइधम्मकहाइयं सुदं णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइ गमणं सम्मं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होऊ मज्झं।

(नौवार णमोकार मन्त्र पढ़ कर कायोत्सर्ग करे)

तदनन्तर विनायक यन्त्र की पूजा कर निम्न लिखित 'महर्षि पर्युपासन' पढ़े।

महर्षि पर्युपासन

ओषधीरसबलर्द्धितपःस्थाः क्षेत्रबुद्धिकलिताः क्रिययाढ्याः।
विक्रियर्द्धिमहिताः प्रणिधानप्राप्तसंस्तुतितटा मुनिपूज्याः ॥१॥
केवलावधिमनःप्रसराङ्गा वीजकोष्ठमतिभाजनशुद्धाः।
वीतरागमदमत्सरभावा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥२॥
यद्वचोऽमृतमहानदमग्ना जन्मदाहपरितापमपास्य।
निर्वृः सुखसमाजतटेषु बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥३॥
श्रोतृभिन्नमतयः पदपन्था दृष्टसंस्तुतिपदार्थविभावाः।
तत्वसंकलितधर्म्यसुशुक्ला बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥४॥
स्पर्शनश्रवणलोकनबुद्धा घ्राणसंस्थरसनोपकृता ये।
दूरतोऽप्यनुभवंहिसमाप्ता बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥५॥
छिन्नस्वप्नविधिना चतुर्दशदिक्सुपूर्वमतिना निमित्तगा।
वादिबुद्धिकृतिनो मतिश्रमा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥६॥
अष्टधोक्तदशधाभिदया ये बुद्धिवृद्धिसहिताः शिवयात्राः।
विण्मलादिगदहापनदेहा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥७॥
दृष्टवक्त्रमनसां विषभक्तिप्रीणिताः श्रुतसरित्पतिपुष्टाः।
लोकमङ्गलिषु संन्यसिता ये बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाक्यमानसबलेन समग्रा उग्रदीप्ततपसस्त्रिकगुप्ताः ।
घोरवीर्यगुणभावितचित्ता बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥९॥
दुग्धमध्वमृतभोजनकृत्वा सर्पिरास्त्रविचोऽभि नियुक्ता ।
अण्वलाघवशित्वविदर्भा वोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥१०॥
कामरूपगुरुताप्रतिसर्पान्तर्द्धयहीनवसतिग्रहयुक्ताः ।
चारणा जलफलाग्निकसूत्रा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥११॥
आत्मशक्तिविभवागतसर्वपौद्गलीयममताश्चुतवस्त्राः ।
सत्परीषहभटार्दनदास्ते बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥१२॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकारसकलऋद्धिप्राप्तेभ्यो मुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़ कर ऋद्धिधारी महर्षियों को अर्घ चढ़ावे)

आद्ये शितुर्वृषभसेनपुरस्सरा ये
सिंहादिसेन पुरतोऽजिततीर्थभर्तुः ।
श्रीसंभवस्य किलचारुविसेन
मुख्यास्तुर्यस्य वज्रधरमुख्यगणाधिराजाः ॥१॥

क्रोकध्वजस्य चमराधिपपूर्वगाः स्युः
पद्मप्रभस्य कुलिशादिपुरःस्थिताश्च ।
श्रीसप्तमस्य बलमुख्यकृताःपुराणे
चन्द्रप्रभस्य शमिनः खलु दत्तमुख्याः ॥२॥

मकराङ्किनो गणभृतश्च विदर्भमुख्याः
श्रीशीतलस्य गणपा अनगारगण्याः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रेयोजिनस्य निकटेध्वनि कुन्थुपूर्वा
धर्मादयो गणधरा वसुपूज्यसूनोः ॥३॥
मेर्वादयश्च विमलेशितुरुद्घवुद्धया
जय्यार्यनामभरणाश्च चतुर्दशस्य ।
धर्मस्य शान्ति शमिनः सदरिष्टमूला
श्चक्रायुधप्रभृतयः खलुशान्तिभर्तुः ॥४॥
कुन्थुप्रभोर्यमभृतः कथिताः स्वयंभू
वर्याःपुनन्त्वरविभोः स्मृतकुम्भमान्याः ।
मल्लेर्विशाखमुनयो मुनिसुव्रतस्य
मल्लिप्रवेकगणपा नमिभर्तुरिष्टाः ॥५॥
सप्तर्द्धिपूजितपदाः सुप्रभासमुख्या
नेमीश्वरस्य वरदत्तमुखा गणेशाः ।
पार्श्वप्रभोः स्वयमितःसुभवान्तनाम्ना
वीरस्य गौतममुनीन्द्रमुखाःपुनन्तु ॥६०॥
एभ्योऽर्घपाद्यमिह यज्ञधरावनार्थं
दत्तं मया विलसतां शुचिवेदिकायाम् ।
पुष्पाञ्जलिप्रकरतुन्दिलमाज्यपात्र-
मुत्तारयामि मुनिमान्यचरित्रभक्त्या ॥७॥

ओं ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरेभ्यस्त्रिपञ्चाशत्सहित चतुर्दशशतसंख्येभ्यश्चरुपात्रमग्रे कृत्वार्घमुत्तारयामीति स्वाहा ॥

(यह पढ़ कर २४ तीर्थंकरों के १४५३ गणधरों को अर्घ चढ़ावे)

(तदन्तर नीचे लिखी चारित्र भक्ति पढ़ कर वेदी पर पुष्पाञ्जलि छोड़े)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रभक्ति

संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रार्थिनः
प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शान्तैनसः प्राणिनः
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तरा-
मारोहन्तु चरित्रमुत्तममिदं जैनेन्द्रमोजस्विनः ॥१॥

तिलोए सव्वजीवाणं हियं धम्मोवदेसणं ।
वड्ढमाणं महावीरं वंदित्ता सव्ववेदिनं ॥२॥

घाइकम्मविघादत्थं घाइकम्मविणासिणा ।
भासियंभव्वजीवाणं चारित्तं पंचभेददो ॥३॥

सामायियं तु चारित्तं छेदोवट्ठावणं तहा ।
तं परिहारविसुद्धिं च संयमं सुहुमं गुणो ॥४॥

जहाखायं तु चारित्तं तहाखायं तु तं पुणो ।
किच्चाहं पंचहाचारं मंगलं मलसोहणं ॥५॥

अहिंसादीणि वुत्तानि महव्वयाणि पंच य ।
समिदीओ तदो पंच पंचइंदियणिग्गहो ॥६॥

छब्भेयावासभूसिज्जा अण्हाणत्तमचेलदा ।
लोयत्तं ठिदिभुत्तिंच अदंतवणमेव च ॥७॥

एयभत्तेण संजुत्ता रिसिमूलगुणा तहा ।
दसधम्मा तिगुत्तीओ सीलाणि सयलाणि य ॥८॥

सव्वेविय परीसहा वुत्तुत्तरगुणा तहा ।
अण्णेवि भासिया संता तेसिं हाणीमयेकया ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जइ रागेण दोसेण मोहेण णदरेण वा ।
वंदित्ता सव्वसिद्धाणं सजुहा सा मुमुक्खुणा ॥१०॥
संजदेण मए सम्मं सव्वसंजमभाविणा ।
सव्वसंजमसिद्धीओ लब्भदे मुत्तिजं सुहं ॥११॥
धम्मोमंगलमुक्किट्ठं अहिंसासंजमो तओ ।
देवावि तस्स पणमंति जस्सधम्मे सया मणो ॥१२॥

इच्छामि भंते चारित्तभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाणजोयस्स सम्मत्ताहिट्ठियस्स सव्वपहाणस्स णिव्वाणसग्गस्स संजमस्स कम्मणिज्जरफलस्स खमाहरस्स पंचमहव्वयसंपण्णस्स तिगुत्तिगुत्तस्स पंचसमिदिजुत्तस्य णाणज्झाणसाहणस्स समयाइ-पवेसयस्स सम्मचरित्तस्स सदा णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि मरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

(नौ वार णमोकार मन्त्र पढ़ कर कायोत्सर्ग करे)

(तदनन्तर निम्नलिखित अर्घ चढ़ावे)

इन्द्रभूतिरग्निभूतिर्वायुभूतिः सुधर्मकः ।
मौर्यमौऽढ्यौ पुत्रमित्राववकम्पनसुनामधृक् ॥१॥

ओं ह्रीं गौतमादिएकादशमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्धवेलः प्रभासश्च रुद्रसंख्यान् मुनीन्यजे ।
गोतमं च सुधर्मंच जम्बूस्वामिनमूर्ध्वगम् ॥२॥

ओं ह्रीं अन्त्यकेवलित्रयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रुतकेवलिनोऽन्याँश्च विष्णुनन्द्यपराजितान् ।
गोवर्धनं भद्रबाहुं दशपूर्वधरं यजे ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं श्रुत केवलिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

विशाखप्रोष्ठिलनक्षत्रजयनागपुरस्सरान् ।
सिद्धार्थधृतिषेणाह्वौ विजयंबुद्धिबलं तथा ॥४॥

ओं ह्रीं कतिचिदङ्गधारिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गङ्गदेवं धर्मसेनमेकादश सुश्रुतान् ।
नक्षत्रं जयपालाख्यं पाण्डुं च ध्रुवसेनकम् ॥५॥

कंसाचार्यं पुरोङ्गीयज्ञातारं प्रयजेऽन्वहम् ।
सुभद्रं च यशोभद्रं भद्रबाहुं मुनीश्वरम् ॥६॥

लोहाचार्यं पुरा पूर्वज्ञानचक्रधरं नमः ।
अर्हद्बलिं भूतबलिं माघनन्दिनमुत्तमम् ॥७॥

धरसेनं मुनीन्द्रं च पुष्पदन्तसमाह्वयम् ।
जिनचन्द्रं कुन्दकुन्दमुमास्वामिनमर्थये ॥८॥

ओं ह्रीं ऐदंयुगीनदीक्षाधरणधुरन्धरनिर्ग्रन्थाचार्यवर्येभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्ग्रन्थान्बकुशान् पुलाकबकुशान् किंशीलनिर्ग्रन्थकान्
मूलस्योत्तरसद्गुणावधृतसाः (?) किंचित्प्रकारंगतान् ।
वन्दित्वा जिनकल्पसूत्रितपदान् प्रध्वस्तपापोदयान् ।
वेदीशुद्धिविधिंवदन्तु मुनयोह्यर्घेण संपूजिताः ॥९॥

ओं ह्रीं पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातकपदधरत्रिकन्यूनैककोटी संख्यमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(तदनन्तर मण्डप प्रतिष्ठा में लिखे हुए)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चतुर्णिकायामरसंघ एव--आदि १० श्लोक पढ़ कर पुष्प छोड़े और।

'ओं हूँ फट् किरिटिं घातय घातय—आदि मन्त्र पढ़ कर दशों दिशाओं में पुष्प या पीले सरसों फेंके।

तदनन्तर वेदिका के ऊपर चढ़ाये हुए पुष्प आदि को अलग कर ले तथा विनायक यन्त्र भी दूसरी जगह विराजमान कर दे। वेदिका की भित्ति पर केशर से मातृ[1] का मन्त्र लिखे और ऊपर की कटनी पर अचलयन्त्र रख कर उस पर श्री (मूल नायक) जिनेन्द्र देव की प्रतिमा विराजमान करे। उन पर छत्रत्रय लगावे। वेदिका को अष्ट प्रातिहार्यों तथा अष्टमङ्गल द्रव्य से सुशोभित करे। वन्दनमाला बाँधें। सिद्धयन्त्र, श्रुतस्कन्ध यन्त्र तथा चौंसठऋद्धि यन्त्र विराजमान करे। प्रतिमा जी विराजमान करने के बाद वेदी पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण करे।

वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा

मनुनाभिमहीधरजन्मभुवं मरुदेव्युदरावतरन्तमहम्।
प्रणिपत्य शिरोऽभ्युदयाय यजे कृतमुख्यजिनं वृषभं वृषभम्।१।

ओं ह्रीं ऋषभ जिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जितशत्रुगृहं परिभूषयितुं व्यवहारदिशातनुभूभवम्।
नयनिश्चयतःस्वयमेवभुवं अजितं जिनमर्चतु यज्ञधरम्॥२॥

ओं ह्रीं अजितजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ मातृ का मन्त्र-'ओं ह्रींऽर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व स श ष ह क्लीं ह्रीं क्रौं स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दृढराजसुवंशनभोमिहिरं त्रिजगत्त्रयभूषणमभ्युदयम् ।
जिनसंभवमूर्ध्वगतिप्रदमर्चनया प्रणमामि पुरस्कृतया ॥३॥

ओं ह्रीं संभव जिनेन्द्रायार्घं० ।

कपिकेतनमीश्वरमर्थयतो मृतिजन्मजरापरिनोदयतः ।
भविकस्य महोत्सवसिद्धिमियादतएव यजे ह्यभिनन्दनकम् ॥४॥

ओं ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्रायार्घं० ।

सुमतिं श्रितमर्त्यमतिप्रकरार्पणतोऽर्थकराख्यमवाप्तशिवम् ।
महयामि पितामहमेतदधिजगतीत्रयमूर्जितभक्तियुतः ॥५॥

ओं ह्रीं सुमतिनाथाय जिनेन्द्रायार्घं० ।

धरणेशभवं भवभावमितं जलजप्रभमीश्वरमानमताम् ।
सुरसंपदियर्त्ति न केति यजे चरुदीपफलैः सुरवासभवैः ॥६॥

ओं ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्रायार्घं०

शुभपार्श्वजिनेश्वरपादभुवां रजसां श्रयतां कमलाततयः ।
कति नात्र भवन्ति न यज्ञभुवि,
नयितुं महयामि महध्वनिभिः ॥७॥

ओं ह्रीं सुपार्श्वं जिनेन्द्रायार्घं निर्वपा मोति स्वाहा ।

मनसा परिचिन्त्य विधुः स्वरसात् ममकान्तिहृतिर्जिनदेहघृणेः ।
इति पादभुवंश्रितवानिव तं जिनचन्द्रपदाम्बुजमाश्रयत ॥८॥

ओं ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्रायार्घं० ।

सुमदन्तजिनं नवमं सुविधीतिपराह्णमखण्डमनङ्गहरम् ।
शुचिदेहततिप्रसरं प्रणुतात् सलिलादिगणैर्यजतां विधिना ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* ओं ह्रीं पुष्पदन्तजिनेन्द्रायार्घं० ।

*धन्यधान्यसमृद्धिरतीव यतो यजतां भवतीहसुरेन्द्रधरा ।
दशमं प्रशमं भवशान्तिकरं सुयजामि महध्वनिना प्रमुदा ॥१०॥

ओं ह्रीं शीतलजिनेन्द्रायार्घं० ।

श्रेयोजिनस्य चरणौ परिधार्य चित्ते
संसारपश्चतयदुर्भ्रमणव्यपायः ।
श्रेयोऽर्थिनां भवति तत्कृतये मयापि-
संपूज्यते यजनसद्विधिषु प्रशस्यः ॥११॥

ओं ह्रीं श्रेयोजिनेन्द्रायार्घं० ।

इक्ष्वाकुवंशतिलको वसुपूज्यराजो
यज्जन्मजातकविधौ हरिणार्चितोऽभूत् ।
तद्वासुपूज्यजिनपार्चनया पुनीतः-
स्यामद्य तत्प्रतिकृतिं चरुभिर्यजामि ॥१२॥

ओं ह्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्रायार्घं० ।

काम्पिल्यनाथकृतवर्मगृहावतारं
श्यामाजयाह्वजननीसुखदं नमामि ।
कोलध्वजं विमलमीश्वरमध्वरेऽस्मि
न्नर्चे द्विरुक्तमलहापनकर्मसिद्ध्यै ॥१३॥

ओं ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्रायार्घं० ।

---

* यह श्लोक मूल प्रति में खण्डित हो गया है अतः नया बना कर जोड़ दिया है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साकेतनामकनृपस्य च सिंहसेन-
नाम्नस्तनूजममरार्चितपादपद्मम् ।
संपूजयामि विविधार्हणया ह्यनन्त-
नाथं चतुर्दशजिनं सलिलाक्षतौघैः ॥१४॥

ओं ह्रीं अनन्तजिनेन्द्रायार्घं ।

धर्मं द्विधोपदिशता सदसीन्द्रधार्ये
किं किं न नाम जनताहितमन्वदर्शि ।
श्रीधर्मनाथ भवतेति सदर्थनाम-
संप्राप्तयेऽर्चनविधिं पुरतः करोमि ॥१५॥

ओं ह्रीं धर्मजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीहस्तिनागपुरपालकविश्वसेनः
स्वाङ्के निवेश्य तनयामृतपुष्टितुष्टः
ऐरापि सा सुकुरुवंशनिधानभूमि-
र्यस्माद् बभूव जिनशान्तिमिहाश्रयामि ॥१६॥

ओं ह्रीं शान्तिजिमेन्द्रायार्घं ।

श्रीकुन्थुनाथजिनजन्मनि षट्निकाय-
जीवाः सुखं निरुपमं बुभुजुर्निशङ्कम् ।
किं नाम तत्स्मृतिनिराकुलमानसोऽहं
भोक्ष्ये न सत्वरमतोऽर्चनमारभेय॥१७॥

ओं ह्रीं कुन्थु नाथ जिनेन्द्रायार्घं ।

सद्दर्शनप्लुतसुदर्शनभूपपुत्रं
त्रैलोक्यजीववररक्षणहेतुमित्रम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमित्रसेनजननीखनिरत्नमर्चे
श्रीपुष्पचिह्नमरनाथजिनेन्द्रमर्थ्यम् ॥१८॥

ओं ह्रीं अरनाथजिमेन्द्रायार्घं ।

कुम्भोद्भवं धरणिदुःखहरं प्रजाव-
त्यानन्दकारकमतन्द्रमुनीन्द्रसेव्यम् ।
श्रीमल्लिनाथविभुमध्वरविघ्नशान्त्यै
संपूजये जलसुचन्दनपुष्पदीपैः ॥१९॥

ओं ह्रीं मल्लिजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

राजत्सुराजहरिवंशनभोविवस्वान्-
वप्राम्बिकाप्रियसुतो मुनिसुव्रताख्यः ।
संपूजये शिवपथप्रतिपत्तिहेतुर्यज्ञे-
मया विविधवस्तुभिरर्हणेऽस्मिन् ॥२०॥

ओं ह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्रायार्घं—

सन्मैथिलेशविजयाह्वगृहेऽवतीर्णा
कल्याणपञ्चकसमर्पितपादपद्मम् ।
धर्माम्बुवाहपरिपोषितभव्यसस्यं
नित्यं नमिं जिनवरं महसार्चयामि ॥२१॥

ओं ह्रीं नमिजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वारावतीपतिसमुद्रजयेशमान्यं-
श्रीयादवेशबलकेशवपूजिताङ्घ्रिम् ।
शङ्खाङ्कमम्बुधरमेचकदेहमर्चे-
सद्ब्रह्मचारिमणिनेमिजिनंजलाद्यैः ॥२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं नेमिजिनेन्द्रायार्घं ।

काशीपुरीशनृपभूषणविश्वसेन
नेत्रप्रियं कमठशाठ्यविखण्डनेनम् ।
पद्माहिराजविबुधव्रजपूजनाङ्कं
वन्देऽर्चयामि शिरसा नतममौलिनेतः ॥२३

ओं ह्रीं पार्श्वजिनेन्द्रायार्घं ।

सिद्धार्थभूपतिगणेन पुरस्क्रियाया-
मानन्दताण्डवविधौ स्वजनुः शशंसे ।
श्रीश्रेणिकेन सदसि ध्रुवभूपदाप्त्यै
यज्ञेऽर्चयामि वरवीरजिनेन्द्रमस्मिन् ॥२४॥

ओं ह्रीं श्री वर्धमानजिनेन्द्रायार्घं ।

अत्राहूत सुपर्वपर्वनिकरे (वेदी) विम्बप्रतिष्ठोत्सवे
संपूज्याश्चतुरुत्तरा जिनवरा विंशप्रमाः सम्प्रति ।
संजाग्रत्समयादयैकसुकृतानुद्धार्य मोक्षं गता—
स्तेऽत्रागत्य समस्तमध्वरकृतं गृह्णन्तु पूजाविधिम् ।२५।

ओं ह्रीं वर्तमान चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) कलशारोहण विधि *

कलशा को एक थाली में रखकर तख्त पर रक्खे। जल से स्नपन कर केशर लगावे माला पहिनावे तदनन्तर विनायक यंत्र की पूजा करे कलशा के लिये निम्न लिखित पाँच अर्घं चढ़ावे—

ओं ह्रीं षोडशजिनालयोद्भासितसुदर्शनमेरुसम्बन्धिचूलिकायै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ओं ह्रीं षोडशजिनालयोद्भासितविजयमेरु सम्बन्धि चूलिकायै अर्घं

ओं ह्रीं षोडश जिनालयोद्भासित अचल मेरु सम्बन्धि चूलकायै अर्घं

ओं ह्रीं षोडश जिनालयोद्भासित मन्दर मेरु सम्बन्धि चूलकाये अर्घं

ओं ह्रीं षोडश जिनालयोद्भासित विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि चूलिकायै अर्घं।

तदनन्तर भोजपत्र पर केशरसे अचल यन्त्र लिखकर कलशाके भीतर रख दे और कलशा पर केशरसे स्वतिक बनाकर—

'ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआ उसा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'

यह मन्त्र नौ बार पढ़कर कलशा पर पुष्प डाले तथा रक्षासूत्र बाँधे, महर्षिपर्युपासनका पाठ पढ़े।

तदनन्तर हवन और शान्तिधारा कर सिद्ध भक्तिपूर्वक 'ओं ह्रीं णमो सव्व सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपत्तये नमः स्वाहा' यह मन्त्र पढ़ मन्दिरकी शिखर कलशारोहण करे। कलशाको मशालेसे पच्ची कर दे। कलशारोहणके बाद 'ओं ह्रीं णमो अरहंताणं स्वस्ति

---

* कलशारोहणकी दूसरी बिस्तृत विधि परिशिष्टमें दी है। अपनी रुचिके अनुसार कोई भी विधि करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा'। यह मन्त्र पढ़कर ध्वजा चढ़ावें और शान्तिमन्त्र पढ़कर चारों ओर पुष्पवर्षा करे।

हवन की विधि*

मण्डपमें वेदीके सन्मुख चौकोर, गोल और त्रिकोण ऐसे तीन कुण्ड बनवावे। यदि तीन कुण्ड बनवानेकी असुविधा हो तो एक चौकोन कुण्ड बनाकर शेष दो कुण्डोंकी उसीमें स्थापना कर ले। यदि हवन में बैठनेवालोंकी संख्या अधिक हो तो अलगसे स्थण्डिल बना लेना चाहिये। कुण्डपर इन्द्र इन्द्राणी और जप करनेवाले बैठें। अन्य लोग स्थण्डिलों पर बैठ जावें। हवन के लिए साकल्य और समिधाएँ पहले से तैयार कर लें। हवन में बैठनेवाले एक वस्त्र पहिनकर न बैठें। प्रारम्भ में सब सब लोग अपने अपने स्था न पर बड़े होकर मङ्गलाष्टक पढ़ते हुए कुण्डपर पुष्प छोड़ें। तदनन्तर

'ओं ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर कुण्डकी भूमिमें पुष्प छोड़े तथा दर्भकी कुचीसे भूमिका मार्जन करे।

'ओं ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं यं क्षः फट् स्वाहा'

(यह मन्त्र पढ़कर हवनकी भूमि-कुण्ड पर जल सींचे)।

'ओं ह्रीं अग्निकुमाराय ह्म्ल्व्र्यूं ज्वल ज्वल तेजःपतये अमित तेजसे स्वाहा'।

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमि को संतप्त करे)

ओं ह्रीं अर्हं क्षं वं बं श्री पीठस्थापनं करोमीति स्वाहा'

(यह पढ़कर होम कुण्डके पश्चिम में पीठ स्थापन करे)

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशांतिं कुर्वन्तु श्री पठि यन्त्रस्थापनं करोमीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(यह पढ़कर पीठ पर विनायक यन्त्र विराजमान करे) तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्रोंसे यन्त्रकी पूजा करे—अर्घ चढ़ावे।

ओं ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा।
ओं ह्रीं अर्हं नमः परमात्मकेभ्यः स्वाहा।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा।
ओं ह्रीं अर्हं नमोनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः स्वाहा।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः स्वाहा।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त सुखेभ्यः स्वाहा।

तदनन्तर—

ओं ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहततेजसे स्वाहा।
यह पढ़कर धर्मचक्रके लिये अर्घ चढ़ावे।
ओं ह्रीं श्वेतछत्रत्रयश्रियै स्वाहा।
(यह पढ़कर छत्रत्रयको अर्घ देवे)।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं हं सौं ह्रौं सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ, सन्निहिता भव भव वषट्।

(यह मन्त्र पढ़कर सरस्वतीका आह्वान करे)।

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञानायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर सरस्वतीजिनवाणीको अर्घ देवे)।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्रपवित्रतरगात्र,चतुरशीतिलक्षोत्तरगुणाष्टदशसहस्रशीलधर गणधरचरण ! आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ संनिहितो भव भव'

(यह पढ़कर निर्ग्रन्थ गुरुका आह्वान करे)।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(यह पढ़कर गुरु को अर्घ चढ़ावे)।

ओं ह्रीं स्वस्तिविधानाय पुण्याह वाचनार्थं च कलशं स्थापयामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर चांवलों पर जल भरा एवं श्रीफल तथा तूल आदि से सुशोभित कलश स्थापित करे।

ओं ह्रों ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरि-पुण्डरीकमहापुण्डरीकगङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजलसुवर्णघट प्रक्षालित-नवरत्नगन्धाक्षतपुष्पोर्जितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा'

(यह पढ़कर कलश पर थोड़ा प्रासुक जल डाले)।

ओं ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर घृतसे प्रज्वलित कर चारों दिशाओंमें चार दीपक रखे) तदनन्तर—

(नीचे लिखे मन्त्र बोलकर क्रम से जल आदि आठ द्रव्य चढ़ावे)।

ओं ह्रीं नीरजसे नमः (जलम्)
ओं ह्रीं शीलगन्धाय नमः (चन्दनम्)
ओं ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतम्)
ओं ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)
ओं ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यम्)
ओं ह्रीं ज्ञानोद्योतनाय नमः (दीपम्)
ओं ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)
ओं ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः (फलम्)
ओं ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घम्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तदनन्तर—

ओं ह्रीं होमार्थं अग्नित्रयाधारभूतां समिधां स्थापयामि ।

(यह पढ़कर कुण्ड में समिधाएं स्थापित करे) ।

ओं ओं ओं ओं रं रं रं रं रं अग्नि स्थापयामि

(यह पढ़कर कपूर जलाकर कुण्डमें अग्नि स्थापन करे) ।

जिनेन्द्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नैः
संशुष्कदर्भाग्रधृताग्निकीलैः ।
कुण्डस्थिते सेन्धनशुद्धवह्नौ
संधुक्षणं संप्रति संतनोमि ॥

ओं ह्रीं श्रीं रं रं रं रं दर्भफूलेन ज्वलय ज्वलय नमः फट् स्वाहा ।
(यह पढ़कर डाभके फूलसे अग्निका संधुक्षण करे) ।

श्री तीर्थनाथपरिनिर्वृतिपूतकाले
ह्यागत्य वह्निसुरपा मुकुटोल्लसद्भिः ।
वह्नित्रजैर्जिनपदेहमुदारभक्त्या-
देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि ॥१॥

ओं ह्रीं चतुरस्रे तीर्थकरकुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर कुण्डमें अर्घ चढ़ावे) ।

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽ
ग्नीन्द्रोत्तमाङ्गस्फुरदुग्ररोचिः ।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो
विघ्नौघशान्त्यै विधिना हुताशः ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीं वृत्ते द्वितीयगणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(यह पढ़कर कुण्डमें अर्घ चढ़ावे)

श्री दक्षिणाग्निः परिकल्पितश्च
किरीटदेशात्प्रणताग्निदेवैः ।
निर्वाणकल्भाणकपूतकाले
तमर्चये विघ्नविनाशनाय ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीं त्रिकोणे तृतीयसामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घं निर्वपा०

(यह पढ़कर कुण्डमें अर्घ चढ़ावे)।

तदनन्तर—

शुद्ध घी से निम्नलिखित आहुतियाँ देवें।

ओं ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं साधुभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं जिनबिम्बेभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा। ओं ह्रीं सम्यक् चरित्राय स्वाहा ॥

(साकल्यसे आहुतियाँ दे। मन्त्रके बाद स्वाहा शब्द का उच्चारण स्पष्ट करे)।

पीठिका मन्त्रः

ओं सत्य जाताय नमः स्वाहा। ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ओं अनुपम जाताय नमः स्वाहा। ओं स्वप्रधानाय नमः स्वाहा। ओं अचलाय नमः स्वाहा। ओं अक्षयाय नमः स्वाहा। ओं अव्यावाधाय नमः स्वाहा। ओं अनन्तज्ञानाय नमः स्वाहा। ओं अनन्त दर्शनाय नमः स्वाहा। ओं अनन्तवीर्याय नमः स्वाहाः। ओं अनन्तसुखाय नमः स्वाहा। ओं नीरजसे नमः स्वाहा। ओं निर्मलाय नमः स्वाहा। ओं अच्छेद्याय नमः स्वाहा। ओं अभेद्याय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमः । ओं अजराय नमः स्वाहा । ओं अमराय नमः स्वाहा । ओं अप्रमेयाय नमः स्वाहा । ओं अगर्भवासाय नमः स्वाहा । ओं अक्षोभाय नमः स्वाहा । ओं अविलीनाय नमः स्वाहा । ओं परमधनाय नमः स्वाहा । ओं परमकाष्ठायोगरूपाय नमः स्वाहा । ओं लोकाग्रनिवासिने नमो नमः स्वाहा । ओं परम सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ओं अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ओं ह्रीं केवलिसिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा । ओं अन्तकृतसिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा । ओं परम्परा सिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा । ओं अनादि परम्परासिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ओं अनाद्यनुपम सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्यनिर्वाणपूजार्हअग्नीन्द्राय स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

(यह काम्यमन्त्र पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य हवन करनेवालों पर पुष्प फेंके ! अथवा जलके छींटें देवे)

जाति मन्त्राः

ओं सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अनादि गमनस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा ।

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

निस्तारकमन्त्राः

ओं सत्य जाताय स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय स्वाहा । ओं षट्कर्मणे स्वाहा । ओं ग्रामयतये स्वाहा । ओं अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं स्नातकाय स्वाहा। ओं श्रावकाय स्वाहा। ओं देवब्राह्मणायों स्वाहा। ओं सुब्राह्मणाय स्वाहा। ओं अनुपमाय स्वाहा। अ-सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधि-मरणं भवतु स्वाहा।

ऋषि मन्त्राः

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा। ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ओं निर्ग्रन्थाय नमः स्वाहा। ओं वीतरागाय नमः स्वाहा। ओं महाव्रताय नमः स्वाहा। ओं त्रिगुप्ताय नमः स्वाहा। ओं महा-योगाय नमः स्वाहा। ओं विविधयोगायनमः स्वाहा। ओं विविर्द्धये नमः स्वाहा। ओं अङ्गधरायनमः स्वाहा। ओं पूर्वधराय नमः स्वाहा। ओं गणधराय नमः स्वाहा। ओं परमर्षिभ्यो नमो नमः स्वाहा। ओं अनुपमजाताय नमः स्वाहा। ओं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधि-मरणं भवतु स्वाहा।

सुरेन्द्रमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा। ओं अर्हज्जाताय स्वाहा। ओं दिव्य-जाताय स्वाहा। ओं दिव्यार्चिर्जाताय स्वाहा। ओं नेमिनाथाय स्वाहा। ओं सौधर्माय स्वादा। ओं कल्पाधिपतये स्वाहा। ओं अनुचराय स्वाहा। ओं परम्परेन्द्राय स्वाहा। ओं अहमिन्द्राय स्वाहा। ओं परमार्हताय स्वाहा। ओं अनुपमाय स्वाहा। ओं सम्य-ग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधि-मरणं भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमराजादिमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा। ओं अर्हज्जाताय स्वाहा। ओं अनुपमेन्द्राय स्वाहा। ओं विजयार्च्यजाताय स्वाहा। ओं नेमिनाथाय स्वाहा। ओं परमजाताय स्वाहा। ओं परमार्हताय स्वाहा। ओं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः दिशाञ्जन दिशाञ्जन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

परमेष्ठिमन्त्राः

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा। ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ओं परमजाताय नमः स्वाहा। ओं परमार्हताय नमः स्वाहा। ओं परमरूपाय नमः स्वाहा। ओं परमतेजसे नमः स्वाहा। ओं परमगुणाय नमः स्वाहा। ओं परमस्थानाय नमः स्वाहा। ओं परमयोगिने नमः स्वाहा। ओं परधभाग्याय नमः स्वाहा। ओं परमर्द्धये नमः स्वाहा। ओं परमप्रसादाय नमः स्वाहा। ओं परमविज्ञानाय नमः स्वाहा। ओं परमदर्शनाय नमः स्वाहा। ओं परमवीर्याय नमः स्वाहा। ओं परमसुखाय नमः स्वाहा। ओं परमसर्वज्ञाय नमः स्वाहा। ओं अर्हते नमः स्वाहा। ओं परमेष्ठिने नमः स्वाहा। ओं परमनेत्रे नमोनमः स्वाहा। ओं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रैलोक्य विजय त्रैलोक्यविजय धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

तदनन्तर—

जिस मन्त्रका जितना जप किया हो उसकी दशांश आहुतियाँ देना चाहिये। यह मन्त्र प्रतिष्ठाचार्य मनमें बोलकर स्वाहा शब्दका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्चारण करे और तदनन्तर हवन करनेवाले सब महाशय स्वाहा बोलकर आहुति देवें।

हवन समाप्त होने पर जो घट स्थापित किया था उसे हाथमें लेकर इन्द्र* वृहच्छान्ति धारा दे। उसके बाद निम्नलिखित पुण्याह वाचन करे।

पुण्याहवाचन

ओं पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागरप्रभृतयःश्चतुर्विंशतिभूतपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां। (धारा)

ओं सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति परम-जिनेन्द्रा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ओं भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतुर्विंशति भविष्य-त्परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ओं त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धरप्रभृतयो विदेहगत विंशति परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ओं वृषभसेनादि गणधरदेवा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ओं सप्तर्द्धि विशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेक दिगम्बर साधुचरणा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्मपरा-यणा भवन्तु। दान तपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्धन्ताम्।

तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काम-

---

* वृहच्छान्ति धारा पीछे परिशिष्ट में दी है सुविधानुसार उसे करना चाहिये।

Ganesh Varni-Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माङ्गल्योत्सवाः सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यंवर्धताम्, धर्मोवर्धताम्, श्रीर्वर्धताम्, कुलंगोत्रं चाभिवर्धेताम्, स्वस्तिभद्रं चास्तु, भ्वीं द्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्र चरणारविन्देष्वानन्दभक्तिः सदास्तु।

तदनन्तर शान्तिपाठ और विसर्जन पाठ पढ़कर कलशा ले मचान पर चढे तथा नीचे लिखी सिद्धभक्ति बोले—

सिद्धभक्तिः (प्राकृत)

असरीरा जीवघना उपजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायारमणायारा लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥१॥
मूलोत्तरपयडीणं वंधोदयसत्तकम्मउम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा अट्ठगुणा तीदसंसारा ॥२॥
अट्ठवियकम्मविघडा सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा ॥३॥
सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्धबुद्धी य लद्धिसब्भावा।
तिहुअण सिरिसेहरया पसियंतु भटारया सव्वे ॥४॥
गमणागमण विमुक्ते विहडियकम्म पयडिसंघारा।
सासयसुहसंपत्ते ते सिद्धावंदियोणिच्चं ॥ ५ ॥
जयमंगलभूदाणं विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं णमो सदा सव्वसिद्धाणं ॥६॥
सम्मत्तणाण दंसण वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तव सिद्धे णयसिद्धे संजयसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि ॥८॥

इच्छामि भंते सिद्धभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचरित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्ममुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमच्छयाम्मि पयाट्ठियाणं तव सिद्धाणं णय सिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्तसिद्धाणं तीदाणागदवट्टमाण कालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं। इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण भावपूजास्तवसमेतं कायोत्सगं करोमि।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

णमो अरहंताणं णमोसिद्धाणं णमो आइरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं॥

(आगे संस्कृत सिद्ध भक्ति दी जाती है। संस्कृत और प्राकृत में से इच्छानुसार कोई एक पढ़ना चाहिये)।

सिद्धभक्ति *

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान्साधितस्वभावान्
वन्दे सिद्धिप्रसिद्धयै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणाच्छादिदोषापहाराद्।
योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥१॥

नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्नयुक्ते।
रस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजफलभुक्तत्क्षयान्मोक्षभागी।

* यह सिद्धभक्ति दशभक्त्यादिसंग्रह से उद्धतकी गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा ।
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथासाध्यसिद्धिः ।२
२. त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमल सद्दर्शनज्ञानचर्या–
सम्यद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यञ्जिताचिन्त्यसारैः ।
कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्व लब्धि–
ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः।। ३।।
जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं संप्रतृप्यन् वितन्वन् ।
धुन्वन्ध्वान्तं नितान्तं निचितमनुसभं प्रीणयन्नीशभावम् ।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा ।
ह्यात्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन् सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः।।४
छिन्दन् शेषानशेषान्निगलबलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः
सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः ।
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवण विषय सम्प्राप्ति लब्धिप्रभावै–
रूर्ध्वव्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये।।५
अन्याकाराप्तिहेतुर्नच भवति परो येन तेनाल्पहीनः
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः ।
क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वरमरणजरानिष्टयोगप्रमोह–
व्यापत्त्याद्युग्रदुःख प्रभव भवहतेः कोऽस्य सौख्यस्य माता ।।६।।
आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतवाधं विशालं
वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द्वभावम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपमममितं शाश्वतं सर्वकाल-
मुत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥७॥
नार्थः क्षुत्तृड्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या
नास्पृष्टेर्गन्धमाल्यैर्न हि मृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात् ।
आतङ्कार्त्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावद्
दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥८॥
तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि-
चर्यासिद्धाः समन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः ।
भूता भव्या भवन्तः सकलजगति ये स्तूयमाना विशिष्टै-
स्तान्सर्वान्नौम्यनन्तान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ॥९॥

इच्छामि भंते सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्म-णाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठ-गुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पयट्ठियाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं अदीदाणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि वंदामि पूजेमि णमंस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

मध्याह्नके बाद अपने अपने यहाँ की आम्नायके अनुसार विमानयात्रा या रथयात्राका जुलूस निकाल कर किसी जलाशय पर जावे । वहाँ समारोहके साथ जिनेन्द्र भगवान् का कलशाभिषेक करे ।

६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि पद्धति हो तो फूलमाल, ज्ञानमाल आदि कर जनताकी धार्मिक भावनाको वृद्धिंगत करे। तदनन्तर उसी समारोहके साथ मण्डप में वापिस आवे।

रात्रिको नृत्य-गान, शास्त्रप्रवचन तथा समारोप भाषण आदिके द्वारा उत्सवकी समाप्ति करे।

(इस प्रकार तृतीय दिनकी विधि पूर्ण हुई)

(२) कलशारोहणविधिः[१]

नतामरशिरोरत्नप्रभाप्रोतनखत्विषे ।
नमो जिनाय दुर्वारमारवीरमदच्छिदे ॥१॥
जिनवाग्देवतां नत्वा गुरून् साधून्पुनः पुनः ।
कलशारोहणार्चां वै करोमि जिनयज्ञके ॥२॥
तत्रादौ गन्धकुट्यन्तः सकलीकरणान्वितः ।
देव-शास्त्र-गुरूणां च पूजनं कुरुतां ततः ॥३॥
महर्षीणां पर्युपासं पञ्चकौमारपूजनम् ।
पञ्चसद्गुरुपूजां च शान्तिधारात्रयं पुनः ॥४॥
अर्हत्सिद्धमुनीनाञ्चाष्टकं कृत्वा पृथक् ततः ।
कुम्भस्य स्नपनं गन्धलेपनं मालयार्चनम् ॥५॥
तत्र पुष्पाञ्जलिं क्षिप्त्वा सिद्धार्थकुशदर्भकान् ।
परिक्षिप्य जलैः कुम्भं सेचनीयं पृथक् पृथक् ॥६॥

---

१ यह विधि पं० बारेलालजी राजवैद्य, प्रतिष्ठाचार्य टीमकगढ़की हस्तलिखित प्रतियों परसे ली गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरं मेघकुमाराख्यं पूजयेत्सलिलादिभिः ।
पूजयेत्शंकुदेवञ्च सप्तावयवपूजनम् ॥७॥
ध्वजादिरोहणं कृत्वा मन्त्रोच्चारणपूर्वकम् ।
मङ्गलद्रव्यविन्यासं स्वकीयपरिपूजनम् ॥८॥
कुम्भे स्रग्धारणं चैव चन्दनैर्लेपनं पुनः ।
रक्षाभिधानं पुण्याहं घोषणं स्वस्तिवाचनम् ॥९॥
आशीर्वादविसर्गौ च सर्षपान् मस्तके क्षिपेत् ।
मन्दिरं त्रिकवारं च परिक्राम्येत् मूर्धनि ॥१०॥
शिखरस्य स्वर्णकुम्भं शङ्कौ संस्थापयेत्पुनः ।
जयवाद्यादिसोत्साहं नृत्यगीतैर्महाजनैः ॥११॥
सयागं च महापूजां महादानं पुनः पुनः ।
द्रव्यदानं तु ताम्बूलैः फलैः संतोषयेत्कृती ॥१२॥

(उक्त श्लोकोंमें कलशारोहणकी विधि संकलित की गई है। बताया गया है कि गन्धकुटीके भीतर देव शास्त्र गुरुकी पूजा कर महर्षि पर्युपासनका पाठ पढ़े। फिर वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व और वर्धमान इन पञ्च बालब्रह्मचारी तीर्थङ्करोंकी पूजा कर पञ्चपरमेष्ठी की पूजा करे। तदनन्तर तीन शान्तिधारा देकर अर्हन्त, सिद्ध और मुनियोंका अष्टक पढ़ कलशाका जलसे स्नपन करे। उस पर केशर लगावे, माला धारण करे। फिर पुष्प छोड़कर उस पर पीले सरसों तथा कुशा डाले। शंकुदेव, कलशा के सात नग और कलशा पर चन्दन लगा माला पहिनावे। फिर रक्षामन्त्र, हवन. पुण्याहवाचन शान्ति और विसर्जन कर कलशा लेकर समूहके साथ जिस मन्दिर पर कलशा चढ़ना है उसकी तीन प्रदक्षिणा देवे। अनन्तर बाजों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के शब्दके साथ कुशा पर कलशारोहण करे। दान देवे। आगत सहधर्मी भाइयोंका सत्कार करे।)

कलशाको एक कोपरमें रखकर मण्डपमें जिन प्रतिमाके समक्ष रक्खे। तदनन्तर देव शास्त्र गुरुकी पूजा कर 'महर्षिपर्युपासन' पढ़े। तदनन्तर नीचे लिखे श्लोक बोले—

वृषभोऽजितनामा च शंभवश्चाभिनन्दनः।
सुमतिः पद्मभासश्च सुपार्श्वो जिनसत्तमः॥
चन्द्राभः पुष्पदन्तश्च शीतलो भगवान्मुनिः।
श्रेयांश्च वासुपूज्यश्च विमलो विमलद्युतिः॥
अनन्तो धर्मनामा च शान्तिः कुन्थुर्जिनोत्तमः।
अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमितीर्थकृत्॥
हरिवंशसमुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारिः पार्श्वो नागेन्द्रपूजितः॥
कर्मान्तकृन्महावीरः सिद्धार्थकुलसंभवः।
एते सुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विषः॥
पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य शान्तिं कुर्वन्तु शाश्वतीम्॥

(यह पढ़कर कलशा पर पुष्प वर्षा करे) तदनन्तर

वासुपूज्यस्तथा मल्लिर्नेमिः पार्श्वोऽथ सन्मतिः।
कौमारे पञ्च निष्क्रान्तास्तान्यजे विघ्नशान्तये॥

ओं ह्रीं पञ्चकौमारनिष्क्रान्तजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हन् सिद्धस्तथा सूरिरुपाध्यायोऽथ सन्मुनिः ।
पञ्चैते गुरवो नित्यं समाराध्या घटोत्सवे ॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तदतन्तर—

ओं नमोर्हते भगवते शान्तिनाथाय सर्वशान्तिकराय सर्वक्षुद्रोपद्रवनाशनाय सर्वपरकृतपरचक्रविध्वंसनाय जिनमतसूर्योद्योतकाय नमः । जरां छिन्द छिन्द जन्म छिन्द छिन्द, वैरिणं छिन्द छिन्द, विषं छिन्द छिन्द, सर्पवृश्चिकभयं छिन्द छिन्द ।

शत्रवो निधनं यान्तु हतास्ते परिपन्थिनः ।
सुखमायुः सदा चैवं प्रतापोऽप्रतिमोऽस्तु च ॥

(यह पढ़कर तीन बार शान्तिधारा देवे)

(तदनन्तर नीचे लिखा अष्टक पढ़कर जलादि आठ द्रव्य चढ़ावे)

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
व्योमगङ्गाजलैः पूतैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥१॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति० ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
चन्दनमिश्रोदकाद्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥२॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति० ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
सद्द्रवैरक्षतैर्दिव्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥३॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
कुन्दादिसमुदायैश्च यजेऽहं कलशोत्सवे ॥४॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
चरुभिःस्वर्णकस्थाल्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥ ५॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
प्रदीपैर्घृतपूराढ्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥६॥

ओ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
धूपैर्द्युपतिधूमाग्रैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥७॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
मोच-चोचफलाद्यैश्च यजेऽहं कलशोत्सवे ॥८॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल.गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः
फलैरर्घैर्महापूतैरर्हत्सिद्धमुनीन् यजे ॥९॥

ओं ह्रीं अर्हसिद्धाचार्योपाध्माय सर्बसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(तदनन्तर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शान्तिधारा देवे)

ओं प्रीयन्तां प्रीयन्तां सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकेशास्त्रिलोक-महितास्त्रिलोकमध्ये तीर्थंकरा भगवन्तोऽर्हन्तः परमवृषभादयो भुवन-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रयजानां तेजःप्रतापबलवीर्यलक्ष्मीभाग्यसौभाग्यकरा भवन्तु। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अजरामरा भवन्तु सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं बलवीर्यं च कुर्वन्तु स्वाहा।

(शान्तिधारा देवे)

यन्त्रप्रस्थापितस्वर्णभृङ्गनिर्यातसज्जलैः।
सेचयामि महोत्साहात्स्वर्णकुम्भमहोत्सवे॥

ओं ह्रीं भृङ्गारादिकलशक्षालनं करोमीति स्वाहा।

(यह पढ़कर कलश पर जल धारा डाले)

हेमोभकर्तृसत्कुम्भैश्चन्दनादिसुगन्धितैः॥
देवाराध्यजनोत्साहे स्नपनं ते करोम्यहम्॥

ओं ह्रीं सुगन्धितसलिलेन कलशक्षालनं करोमीति स्वाहा।

(यह पढ़कर कलशा पर सुगन्ध की धारा डाले)

पुनः पुनः विलिम्पामि निलिप्तं गणपूजितम्।
स्वर्णकुम्भमहोत्साहे यजेऽहं जिनमन्दिरम्॥

ओं ह्रीं चन्दनेन पुनर्लिप्तं करोमीति स्वाहा।

(यह पढ़कर कलशा पर चन्दन लगावे)

क्षीरार्णवजलैः शुभ्रैः सुगन्धै रससंयुतैः।
कलशान् शोधयेत्सम्यक् स्थैयार्थं मन्दिरोपरि॥

ओं ह्रीं जलैः कलशं परिषेचयामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर कलशा पर जलके छींटे देवे)

जिनमन्दिररक्षार्थं कुम्भादीनां च रोहणम्।
करोमि द्योतनार्थं च पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ततः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ।

(यह पढ़कर कलशा पर पुष्प छोड़े)

सिद्धार्थकुशदर्भादीन् क्षेपयामि समन्ततः ।
तेन चैत्यगृहद्वारे क्षेत्ररक्षार्थमुत्तमान् ॥

ओं ह्रीं सिद्धार्थकुशदर्भान् समन्तात् सर्वदिक्षु कुम्भोपरि परिक्षिपामि

(यह पढ़कर कलशाके चारों ओर पीले सरसों तथा कुशा आदि डाले ।)

लोहरूपमहाशङ्को वैरवंशविनाशकः ।
शिखरे त्वं निषीदात्र महाभक्त्या स्थितो भव ॥

ओं ह्रीं हे शङ्को अत्रागच्छ तिष्ठ २ तिष्ठ ठः ठः सन्निहितो भव भव वषट् ।

(यह पढ़कर पुष्प छोड़े ।)

अनेकान्तमतोद्योतप्रचण्डो व दिवामणिः ।
एवं वितर्ककं शङ्कुं चाये पुष्पवरोत्तमैः ॥

ओं ह्रीं शंक्वर्चनं करोमि ।

हेमकुम्भमहास्थालीं पूजये विधितो मुदा ।
जिनमन्दिरनिर्माणे रक्षार्थं तदुपद्रवात् ॥

ओं ह्रीं हेमकुम्भस्थालीपूजनं करोमीति स्वाहा ।

स्थाल्या उपरिमे भागे सच्चामोकरचक्रिकाम् ।
स्थापयेऽहं विशेषेण मुखे च कलशोत्सवे ॥

ओं ह्रीं प्रथमस्थाने हेमकलशादिपीठेन चक्रिकास्थापनं करोमीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्रिकां हि समर्चामि धर्मचक्रसमन्विताम् ।
पूजयेत्कलशोद्धारे जिनमन्दिररक्षकान् ॥
ओं ह्रीं हेमकलशपीठे चक्रिकापूजनं करोमीति स्वाहा ।

हेमपद्मं स्थितं देव करोमि हेमपद्मवत् ।
जिनमन्दिरमूर्धस्थं स्थिरं तिष्ठ दिवानिशम् ॥
ओं ह्रीं हेमपद्मस्थापनं करोमीति स्वाहा ।

हेम पद्मनिभं हेमपद्मकुम्भं समर्चयेत् ।
प्रतिष्ठाया विधौ नित्यं जलगन्धाक्षतादिभिः ॥
ओं ह्रीं हेमपद्मार्चनं करोमीति स्वाहा ।

हिरण्यमयीं चक्रिकां पूजये विधितोऽन्वहम् ।
जिनमन्दिरमूधस्थां परिपूर्तिप्रसूचिकाम् ॥
ओं ह्रीं हिरण्यचक्रिकास्थापनं करोमीति स्वाहा ।

हेमकुम्भमहे स्थालीं चक्रिकोपरि सुस्थिराम् ।
करोमि विधिवत्पूजां तस्याः कुम्भमहोत्सवे ॥
ओं ह्रीं हिरण्यचक्रिकापूजां करोमीति स्वाहा ।

हेम कुम्भमहे स्थालीं पूजयेद्विधितो मुदा ।
जिनमन्दिरनिर्माणे रक्षार्थं तदुपद्रवात् ॥
ओं ह्रीं हेमकुम्भस्थालीपूजनं करोमीति स्वाहा ।

षष्ठस्थाने हि सुस्थाप्या सच्चामीकरचक्रिका ।
चक्रिकापूजनं कुर्वे शान्त्यर्थं कलशोत्सवे ॥
ओं ह्रीं चामीकरचूलिकापूजनं करोमीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शातकुम्भमयी कुम्भे संस्थाप्या चूलिका वरा ।
सा कुम्भचूलिका प्रोक्ता तां कुर्वे सुभगस्थिताम् ॥

ओं ह्रीं सप्तमस्थाने स्वर्णकुम्भचूलिकास्थापनं करोमीति स्वाहा ।

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैरष्टद्रव्यमनोहरैः ।
हेमकुम्भमहे कुम्भचूलिकां पूजये मते ॥

ओं ह्रीं हेमकुम्भ चूलिका पूजनं करोमीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर कलशाके नगोंकी पूजा करे)

तदनन्तर कलशा पर चन्दन लगाकर नीचे लिखा श्लोक पढ़कर माला पहिनावे ।

मुक्तिदूतीसमा स्रक्ते मूर्धनि स्तात्समा नवा ।
देवाराध्यजनोत्साहं मिथ्यादृङ्मदमर्दनम् ॥

ओं ह्रीं कलशोपरि मालां धारयामीति स्वाहा ।

तदनन्तर—

स्रग्धारणं गन्धलेपं सर्वावयवचर्चनम् ।
रक्षाभिधानमुद्घोष्य स्थापये कलशं जिनाः ॥

यह पढ़कर सब ओर पुष्प छोड़े, शान्ति हवन करे ।

तदनन्तर संभव हो तो मन्दिरकी तीन प्रदक्षिणाएँ देकर शिखर पर चढ़े और 'ओं ह्रीं णमो सर्वसिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये स्वाहा' यह मन्त्र पढ़कर कलशा चढ़ा दे । सिद्धिभक्ति पढ़े और शान्तिके लिये चारो ओर पुष्पवर्षा करे । मन्दिरकी स्थायी व्यवस्थाके लिए यजमानसे स्थायी सम्पत्तिका दान करावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्वजारोहण

ओं णमो अरहंताणं स्वस्तिभद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा

(यह मन्त्र पढ़कर मन्दिर पर ध्वजा चढ़ावे ।)

ध्वजा की ऊँचाई और फल का वर्णन

*कलशादुच्छ्रिते हस्तं ध्वजे नीरोगता भवेत् ।
द्विहस्तमुच्छ्रिते तस्मात्पुत्रर्द्धिर्जायते परा ॥
त्रिहस्तं तस्य सम्पत्तिर्नृपवृद्धिश्चतुःकरम् ।
पञ्चहस्तं सुभिक्षं स्याद् राष्ट्रवृद्धिश्च जायते ॥
अम्बरेण कृतो यऽस्याद् ध्वजः सम्यक् समन्ततः ।
सोतिलक्ष्मीप्रदो राज्ये यशःकीर्तिप्रतापदः ॥
भूपालाबालगोपालललनानां समृद्धिकृत् ।
राज्ञां सुखार्थदायी च धान्यैश्वर्यजयावहः ॥

अर्थात् मन्दिरकी शिखरके कलशोंसे एक हाथ ऊँची ध्वजा आरोग्यता करती है, दो हाथ ऊँची पुत्रादि सम्पत्तिको, तीन हाथ ऊँची धान्यसम्पत्तिको, चार हाथ ऊँची राजाकी वृद्धिको और पाँच हाथ ऊँची सुभिक्ष तथा राज्यवृद्धिको करती है। वस्त्रसे बनी ध्वजा अत्यन्त लक्ष्मीको देनेवाली तथा राज्यमें यशको फैलानेवाली होती है और राजा प्रजा सबको सुखदायी है।

---

* आशाधर प्रतिष्ठापाठ अध्याय ५ श्लोक ७४—७६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खात मुहूर्त तथा नींव भरने की विधि*

जहाँ मन्दिर अथवा वेदीकी नींव खोदी हो वहीं शुभ मुहूर्तमें खात मुहूर्त करना चाहिये। इस समय एक तख्त या चौकी पर विनायक यन्त्र विराजमान करे पूजन करे। तदनन्तर याजकके हाथ से नये गैंती फरुएसे खात मुहूर्त करावे।

मन्दिरके चारो ओर और बीचमें जब नींव खुद चुके तब पाँचों स्थानों पर अथवा किसी स्थान पर मङ्गलाष्टक पढ़कर पुष्प छोड़े। फिर निश्चित दिशा और मुहूर्तमें नींवके गड्ढेके पास याजक और उसकी पत्नीसे पूजा करावे।

'ओं ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशाय महीं पूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

(यह पढ़कर पृथिवीका दर्भपूलसे मार्जन करे।)

ओं ह्रीं मेघकुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं यः सः क्षः फट् स्वाहा।

(यह पढ़कर दर्भपूलमें जल लेकर भूमिको सींचे।

'ओं रं अग्निकुमाराय भूमिं ज्वलय ज्वलय अं हं सं पं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा'

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमिको संतप्त करे')

ओं ह्रीं क्रौं षाष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा'

(यह पढ़कर पृथिवीको जलसे सींचे)

'ओं हूं फट् किरीटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय परमन्त्रान् सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द'

---

* इस प्रकरणकी अधिकांश सामग्री पं० वारेलालजी के संकलनसे संगृहीत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(यह पढ़कर दशों दिशाओंमें पुष्प मिश्रित पीले सरसों विखेरे।

तदनन्तर 'चतुर्णिकायामर संघ एव' इत्यादि श्लोक बोलकर पुष्पक्षेपण करे।

फिर एक ओर यदि एक जगह खुदी हो तो एक जगह विनायक यन्त्रके समान पहले वलय में ॐ, द्वितीय वलयमें अ, सि, आ, उ, सा के पाँच कोठे और तीसरे वलयमें अरहंता मंगलं—आदि के १२ कोठे बनाकर विनायकयन्त्रका पूजन करे, नव देव पूजन करे। फिर महर्षिपर्युपासन—का पाठ बोले। तदनन्तर यदि पाँच जगह नींव खुदी हो तो हर एक जगह एक एक कलश जिस पर केशरसे सांथिया लिखे हो, लेकर उन्हें सर्वौषधि, पञ्चरत्न, पीला सरसों, हल्दी सुपारी. सुगन्धित आदि मंगल द्रव्योंसे भरे। इसके भीतर घृतके दीपक जला-कर द्रव्य रख दे। फिर पारा डालकर उस पर वे कलश रख दे। बीचके कलशके नीचे एक शिलापर विनायक यन्त्रके साथ एक ही ताम्रपत्र पर निम्नलिखित प्रशस्ति खोदकर रख दे।

ओं श्री कुन्दकुन्दाम्नाये मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे, ... वर्षे, ...मासे......पक्षे......तिथौ......वासरे...... ....ग्रामे .... श्रेष्ठिभिः जिनमन्दिरस्य* नीवपूरणं क्रियते स्वस्ति भवतु'

तदनन्तर पाषाणकी एक चतुष्कोण शिलाको गन्धोदकसे धोकर पवित्र करे और इस मन्त्रसे २७ वार मंत्रित करे। फिर इस शिलाको रक्षासूत्रसे वेष्ठित करे। तदनन्तर जनताको स्पर्श करा कर उन पाँच कलशों पर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर रख दे—

शिलां विशालां लवणेन विद्धां सूत्रेण बद्धां समृदं सलोष्ठाम्।
भोगौघपुष्ट्यै दुरितौघपिष्ट्यै वेद्या अधस्ताद्विनिवेशयामि॥

---

* वेदी की नीव हो तो 'जिनवेदिकायाः, पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा की वेदी हो तो 'पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठावेदिकाया'—यह लिखे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं सर्वंजनानन्दकारिणी, सौभाग्यवती तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

तदनन्तर

'ओं भगवते श्रीपार्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय अट्टे मुट्टे क्षुद्रविघट्टे भूतभविष्यतिवर्तमानाय स्वाहा' ।

(यह मन्त्र पढ़कर वीचमें सोनेकी एक कील गाढ़े)

तदनन्तर—

'ओं ह्रां ह्रीं सर्वं शान्तिकुरु कुरु स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर आठ दिशाओंमें पाँच अंगुलप्रमाण लोहकी शलाकाएँ गाड़ देवे। बीचकी शलाकाका प्रमाण सात अंगुल हो। इन शलाकाओंको तेलमें भिगोकर तथा रुईमें लपेट कर गाढ़े।

तदनन्तर—

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे पुण्यसहिताय शक्त्यनुसारेण द्रव्य स्थापनं करोमीति स्वाहा'

(यह मन्त्र पढ़कर शक्तिके अनुसार रुपया, सोना, चाँदी आदि द्रव्य डाले। फिर कारीगरको वस्त्र आदिसे संतुष्ट कर नींव भर दे)

तदनन्तर—

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिकर्म*

किसी प्रकारकी विघ्नवाधा तथा उपसर्गादि के उपस्थित होनेपर शान्ति मन्त्रका इक्कीस हजार प्रमाण जप करे। अभिषेक पूर्वक चौंसठ ऋद्धि विधान करे। हवन करे और पार्श्वनाथ स्तोत्र, शान्त्यष्टक और शान्ति भक्तिका पाठकर वृहच्छान्तिमन्त्रमें अखण्ड जलधारा दे। शान्ति पाठ और विसर्जन पढे। चार दान देवे।

सर्वविघ्नविनाशक—

श्रीपार्श्वनाथ मन्त्रात्मज स्तोत्रम्*

श्रीमद्देवेन्द्रवृन्दारकमकुटमणिज्योतिषां चक्रवालै—
व्यालीढं पादपीठं शठकमठकृतोपद्रवोद्बाधितस्य।
लोकालोकावभासि स्फुरदुरु विमलज्ञानसद्दीपदीपः।
प्रध्वस्तध्वान्तजालः स वितरतु सुखं पार्श्वनाथोऽत्रनित्यम् ॥१
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं विभोस्त्वन्मरकतमणिमाक्रान्तमूर्तिर्हि वं मं
हं सं तं बीजमन्त्रैः कृतसकलजगत्क्षेमरक्षोरुवक्षः।
क्षां क्षीं क्षूं क्षैं समस्तक्षितितलमहित ज्योतिरुद्योतितार्थः
क्षां क्षैंक्षों क्षौं क्षिप्तबीजात्मकसकलतनुर्नः सदा पार्श्वनाथः ॥२॥
ह्रीं कारं रेफयुक्तं रर रर ररं दे सं सं प्रयुक्तं
ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्राँ सरेफं विषदलन कला पञ्चकोद्भासि हं हं
धूं धूं धूं धूम्रवर्णैरखिलमिह जगन्मेविदिह्याशु वश्यं
वौषट् मन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते पार्श्व मां रक्ष रक्ष ॥३॥

---

* शान्तिकर्मकी यह स्तोत्र आदि सामग्री इन्दौरसे प्रकाशित आदिनाथ स्तोत्र और तात्पर्य सूत्र पूजासे की गई है!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आं ह्रीं क्रों सर्ववश्यं कुरु कुरु सरसं क्रामणं तिष्ठ तिष्ठ
हूँ हूँ हूँ रक्ष रक्ष प्रबलबल महाभैरवारातिभीतं।
द्रां द्रीं द्रूं द्रावयेति द्रव हनन करं फट् वषट् बंध बंध
स्वाहा मन्त्रं पठनां त्रिजगदधिपते पार्श्वं मां रक्ष रक्ष ॥४॥

हं सः भ्वीं क्ष्वीं स हंसः कुवलयकलितै रङ्किताङ्ग प्रसूवैः–
भ्वीं वं व्हं पक्षि हं हं हर हर हर हं पक्ष यः पक्षिकोपम्।
वं भ्वं हं संभवं सः सर सर सर स्रूं सः सुधा बीजमन्त्रैः
त्रायस्वस्थावरादि प्रबलविषमुखाहारिभिः पार्श्वनाथः ॥५॥

क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः एतैरहिपतिविनुतैर्मन्त्रबीजेश नित्यं
हा हा कारोग्रनादै र्ज्वलदलन शिखा कल्पदीर्घोर्ध्व केशैः।
पिङ्गक्षै र्लोलजिह्व विंषम विषधरा लङ्कृतैस्तक्ष्णदंष्ट्रै–
र्भूतैः पिशाचै रनघकृतमहोपद्रवाद्रक्ष रक्ष ॥६॥

ॐ झ्रां झ्रः शाकिनीनां सपदि हरमिदं भिन्दि शुद्धेद्धबुद्धेः
ग्लौ क्ष्मं ठं दिव्य जिह्वा गतिमतिकुपितं स्तम्भनं संविधेहि।
फट् फट् सर्व रोगग्रह मरणभयोच्चाटनं चैव पार्श्व :
त्रायस्वाशेष दोपा दमर नर वरैर्नूत पादार विन्दः ॥७॥

स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रएवं प्रबलवलफलं मन्त्रबीजं जिनेन्द्र
रां रीं रूं रौं र एभिः परमत रहितं पार्श्वदेवाधिदेवम्।
क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्र एतै र्ज ज ज ज ज जरा जर्जरीकृत्य देवं
धूं धूं धूं धूम्रवर्णं दुरित विरहितं पार्श्व मां रक्ष नित्यन् ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्थं मन्त्राक्षरार्थं वचनमनुपमं पार्श्वनाथस्य नित्यं ।
विद्वेषोच्चाटनस्तम्भनजनवशकृत्पापरोगापनोदि ।
प्रोत्सर्पज्जङ्गमस्थावरविषमविषध्वंसनं चायुरग्रच-
मारोग्यैश्वर्यभक्त्या स्मरति पठति यः स्तौति तस्येष्टसिद्धिः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पूज्यपादाचार्यविरचितं

शान्त्यष्टकम्

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयं ते प्रजाः
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः ।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमण्डलो
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिलच्छायानुरागं रविः ॥१॥

क्रुद्धाशीविषदंष्ट्रदुर्जयविषज्वालावलीविक्रमो
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवनैर्याति प्रशान्तिं यथा ।
तद्वत्ते चरणारुणाम्बुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणां
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ॥२

संतप्तोत्तमकाञ्चनक्षितिधरश्रीस्पर्धिगौरद्युते
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडाः प्रयान्ति क्षयम् ।
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशतव्याघातनिष्कासिता
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥३॥

त्रैलोक्येश्वरभङ्गलब्धविजयादत्यन्तरौद्रात्मकान् ।
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः ।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानला-
न्न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम् ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकालोकनिरन्तरप्रविततज्ञानैकमूर्ते विभो
नानारत्नपिनद्धदण्डरुचिरश्वेतातपत्रत्रय ।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया-
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जराः ॥५॥

दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुलश्रीमेरुचूडामणे
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर प्राणीष्टभामण्डल ।
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतं
सौख्यं त्वच्चरणारविन्दयुगलं स्तुत्यैव संप्राप्यते ॥६॥

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयं-
स्तावद्धारयतीह पङ्कजवनं निद्रातिभारश्रमम् ।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदय-
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत् ॥७॥

शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र शान्तमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात्
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः ।
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां कुरु
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः ॥८॥

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिभक्तिः

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ॥१॥
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च ।
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥२॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ॥३॥
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्ति मह्यमरं पठते परमां च ॥४॥

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपा
स्तीर्थंकराः सततशान्तिकरा भवन्तु ॥५॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवाञ्जिनेन्द्रः ॥६॥
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः
काले काले च मेघो विकिरतु सलिलं व्याधयो यान्तु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥

इच्छामि भंते शांतिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंच-महाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं चउतीसातिसय-विसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेवेंदमणिमयमउडमत्थयमहियाणं बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसि-मुणि-जदि-अणगारोवगूढाणं थुइसय-सहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्च-कालं अच्चेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ।

आत्मपवित्रीकरणार्थं सकलदोषनिराकरणार्थं सर्वमलातिचार-विशुद्ध्यर्थं सर्वं शान्त्यर्थं शान्तिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

शान्तिमन्त्र

ओं अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातपविनाशनाय ह्रीं शान्ति-नाथाय नमः ।

ओं ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमण्डिताय अशोकतरु-शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सुरपुष्प-वृष्टिशोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दिव्यध्वनि-शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः ।

ओं ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः ।

ओं ह्रीं श्रीशान्तिनाथ र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्टसहिताय बीजाष्टमण्डनमण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः ।

तव भक्तिप्रसादाल्लक्ष्मी-पुर-राज्य-गेहपदभ्रष्टोपद्रवदारिद्र्योद्भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रचण्डपवनामलजलोद्भवोपद्रव - शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाचकृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापारवृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु । सम्पूर्णकल्याणमङ्गलरूपमोक्षपुरुषार्थश्च भवतु ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बृहच्छान्तिमन्त्रः

ओं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारिमंगलं—अरहंतामंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारिलोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ह्रौं अनादिसिद्धमहामन्त्रपूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं द्वीं द्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं नमोऽर्हते भगवते स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं सिद्धचक्राधिपतये अष्टगुणसमृद्धाय फट् स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हन्मुखकमलनिवासिनि पापात्मक्षयंकरि श्रुतज्वालासहस्रप्रज्वलिते सरस्वति तव भक्तिप्रसादात् मम पाप विनाशनं भवतु क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षीरवरधवले अमृतसंभवे बं बं हूं हूं स्वाहा। सरस्वतीभक्तिप्रसादात् सुज्ञानं भवतु।

ओं णमो भयवदो वड्ढमाणसरिसहस्स जस्स चक्कं जलं तं गच्छइ आयासं पायालं भूयलं जुए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा। वर्द्धमानमन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु।

ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा सर्वरक्षा भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं उसहाइ जिणं पणमामि सया अमलो विमलो विरजो वरया, कप्पतरु सव्वकामदुहा मम रक्ख सहापुरुविज्जणिही ।

अट्ठेव य अट्ठसया अट्ठसहस्सा य अट्ठकोडीओ ।
रक्खं तुम्म सरीरं देवासुरपणमिया सिद्धा ॥

ओं ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा स्वधा । 'ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः' एतन्मन्त्रप्रसादात् सर्वभूतव्यन्तरादिबाधाविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः । ओं नमोऽर्हते सर्वं रक्ष हूं फट् स्वाहा । ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदिशागतविघ्नविनाशनं भवतु । ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिशागतविघ्नविनाशनं भवतु ।

ओं सम्प्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण केवलज्ञान-निर्वाणकल्याण विभूषितमहाभ्युदयाः श्रीऋषभाजित-संभवाभिनन्दन-सुमति- पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्त-शीतल-श्रेयो-वासुपूज्य विमलानन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थ्वर-मल्लि-मुनिसुव्रत -नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमान-परमदेवपूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु ।

ओं ह्रीं लोकद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाण-सागर-महासाधु-विमलप्रभ-शुद्धाभ-श्रीधर-सुदत्तामलप्रभोद्धाराग्नि- सन्मति - शिव - कुसुमाञ्जलि-शिवगणोत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर यशोधर-कृष्णज्ञानमति-शुद्धमति-श्रीभद्र-शान्ताश्चेति चतुर्विंशतिभूतपरमदेवपूजनभक्तिप्रसादात्सर्वशान्तिर्भवतु ।

ओं भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवाः महापद्म-देव-सुप्रभ-स्वयंप्रभ-सर्वायुध-नयनदेवोदयदेव-प्रभादेवोदङ्कदेव - प्रश्नकीर्ति-जयकीर्ति-पूर्णबुद्धि-निष्कषाय-विमलप्रभ-बहल-निर्मल-चित्रगुप्त-स्वयंभू-कंदर्प-जयनाथ-विमलनाथ - दिव्यवागनन्तवीर्याश्चेति चतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेवपूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु ।

ओं त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर-युगमन्धर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ -वज्रधर-चन्द्रानन-चन्द्रबाहु - भुजङ्गेश्वर-नेमिप्रभु-वीरसेन-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाभद्र-जयदेव-जितवीर्यांश्वेति पञ्चविदेहक्षेत्रविद्यमानविंशतिपरम देव पूजनभक्तिप्रसादात्सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु ।

पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः ।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य शान्तिं कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥१॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥२॥
दुर्भिक्षादिमहादोषनिवारणपरम्पराः ।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं जिनश्रुतमुनीश्वराः ॥३॥
यत्संस्मरणमात्रेण विघ्ना नश्यन्ति मूलतः ।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं जिनश्रुतमुनीश्वराः ॥४॥
यदर्थान् लभते प्राणी यत्प्रसादात्प्रसादतः ।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं जिनश्रुतमुनीश्वराः ॥५॥

ओं ह्रीं णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा । ऋद्धिमन्त्रभक्ति प्रसादात्सर्वेषां शान्तिर्भवतु । विसूचिकाज्वरादिरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं परमोहिजिणाणं शिरोरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं बीजबुद्धीणं ममात्मनि विवेकज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं परस्परविरोधविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं श्वासरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं प्रतिवादिविद्याविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं च भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं अन्यगृहीतं श्रुतज्ञानं भवतु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं अर्हं णमो उज्जुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं बहुश्रुतज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्ववेदिनो भवन्तु । ओं ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं स्वसमय-परसमयवेदिनो भवंतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं जीवितमरणादिज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं विर्यणयट्टिपत्ताणं कामितवस्तुप्राप्तिर्भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो णमो विज्जाहराणं उपदेशप्रदेशमात्रज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिन्ताज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं अन्तरीक्षगमनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेषप्रतिहतं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं स्थावरजङ्गमकृत विघ्नविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचःस्तम्भनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तम्भनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जलस्तम्भनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादिविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्ट मृगादिभयविनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं लूतागर्भान्तिकावलिविनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबह्मचारिणं भूतप्रेतादिभयविनाशो भवतु ओं ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि पत्ताणं सर्वापमृत्यु विनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अपस्मारप्रज्ञापनचिन्ता विनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो विप्पो सहिय पत्ताणं गजमारी विनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताण मनुष्यामरोपसर्गविनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं बचवलीणं कायबलीणं अपस्मारिगोअजमारोविनाशनं भवतु । ओं हा अर्हं णमो खीरसवीणं अष्टादशकुष्ठगण्डमालादिकविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो सप्पिससवीणं सर्वव्याधि-विनाशन भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं समस्तोपसर्गविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाण अक्षीणऋद्धिर्भवतु ओं ह्री अर्हं णमो वड्ढमाणं राजपुरुषादिभयविनाशनं भवतु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

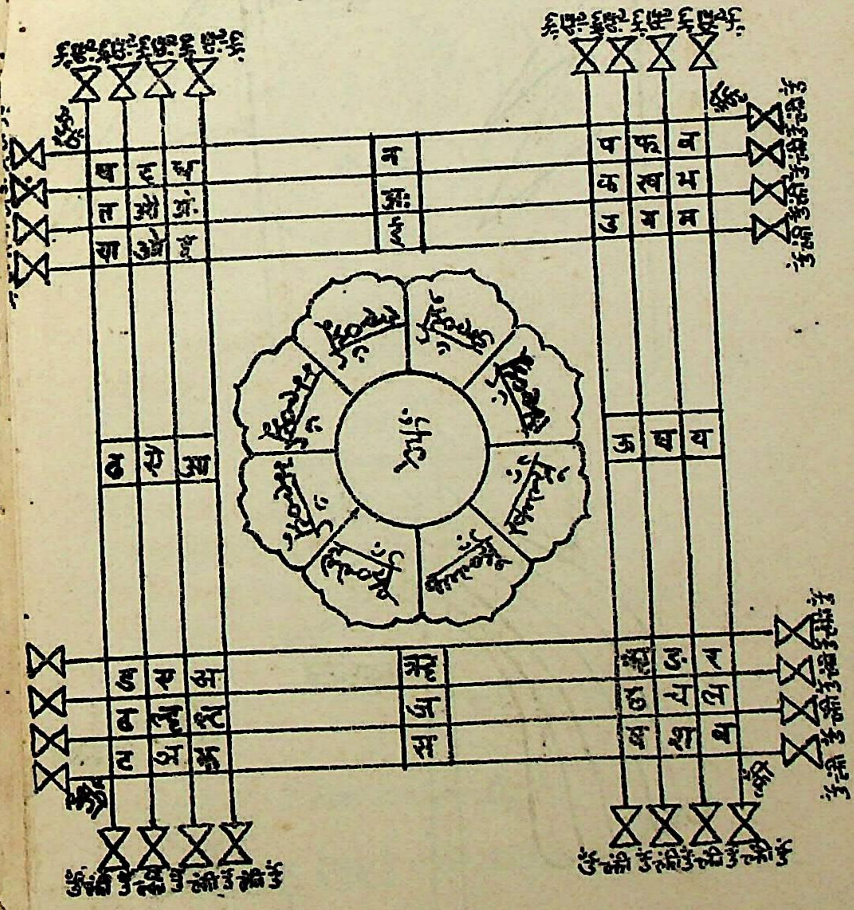

अचल यंत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं णमो भगवदो महदि महावीर वड्ढमाण बुद्धरिसी णं समाधि-सुखं भवतु चतुःषष्टिऋद्धिमन्त्रपूजनभक्तिप्रसादात् चतुःसंघानां सर्व-शान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु धन्यधान्यसमृद्धिर्भवतु रत्नत्रयं भवतु।

ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डितायद्वादशगणसहिताय अनन्त-चतुष्टयसहिताय समवसरणकेवलज्ञानलक्ष्मोशोभिताय अष्टादशदोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसंयुक्ताय परमेष्ठिपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनन्तसंसार-चक्रपरिमर्दनाय अनन्तज्ञानदर्शनवीर्यसुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्य-ब्रह्मणे उपसर्गविनाशाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय ऋष्यार्यिका-श्रावकश्राविकाप्रमुखचतुःसंघोपसर्गविनाशाय अघातिकर्मविनाशाय देवाधिदेवाय नमो नमः। पूर्वोक्तमन्त्राणां पूजन-भक्तिप्रसादात् ऋष्या-र्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सर्वक्रोधमानमायालोभहास्यरत्यरतिशोकभय-जुगुप्सास्त्रीपुरुषनपुंसकवेदविनाशनं भवतु। मिथ्यात्वरागद्वेषमोह-मत्सरासूयेर्ष्याविभाव-विकार-विषाद-प्रमाद-कषाय-विकथाविनाशनं भवतु। सर्वपंचेन्द्रियविषयेच्छास्नेहाशारौद्राकुलताव्याधिदीनतापापदोषविरोधविनाशनं भवतु। सर्वममकारविकल्पनिद्रातृष्णाधितापदुःखवैराहंकारसंकल्पविनाशो भवतु। सर्वाहारभयमैथुनपरिग्रहसंज्ञाविनाशो भवतु। सर्वोपसर्गविघ्न-राजचोरदुष्टमृगे इहलोकपरलोकाकस्मान्मरणवेदनाशरणात्राणभयविनाशो भवतु। सर्वक्षयरोगकुष्टरोगज्वरातिसारादिरोगविनाशो भवतु। सर्व-नरगजगोमहिषधान्यवृक्षगुल्मपत्रपुष्पफलमारीराष्ट्रदेशमारीविश्वमारी विनाशो भवतु। सर्वमोहनीयज्ञानावरणीयदर्शनावरणीयवेदनीयनामगोत्रायुःकर्म-विनाशनं भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नूतनगृहप्रवेश

नवीन गृहकी शुद्धिके लिये शान्तिमन्त्रका कमसे कम ११ हजार जाप करे, नवदेव और विनायकयन्त्रका पूजन कर चुकनेके बाद हवन करे। भक्तामरस्तोत्रका पाठ करे। तदनन्तर हवनकुण्डके कोनों पर रक्खे हुए कलश तथा दीपक, घरके स्वामीके हाथसे लिवा-जाकर घरके मुख्य मुख्य कमरोंमें रखा दे। पात्र दान दे। तथा सहधर्मियोंको आहार दें धर्मवात्सल्य प्रकट करे।

अन्त मङ्गल

आयुर्द्राघयतु व्रतं दृढयतु व्याधीन्व्यपोहत्वयं
श्रेयांसि प्रगुणीकरोतु वितनोत्वासिन्धु शुभ्रं यशः
शत्रून् शातयतु श्रियोऽभिरमत्वश्रान्तमुन्मुद्रय-
त्वानन्दं भजतां प्रतिष्ठित इह श्रीसिद्धनाथः सताम् ॥

(आशाधरस्य)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi